RNI NO. CHHHIN/17604 TC

# लाईफ वर्सिटी

मासिक

जो भविष्य का भय नहीं करता वही वर्तमान का आनंद ले सकता है

वर्ष : 1 | अंक : 08 | माह : जनवरी 2024 | पृष्ठ : 8 | संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, 8817194979 | मूल्य : 5 रू.


## राम नाम पर हर बार फँसती कॉंग्रेस

कांग्रेस ने अपने आधिकारिक बयान में कहा है कि अयोध्या के राम मंदिर में रामलला की मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और लोकसभा में पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी शामिल नहीं होंगे, क्योंकि यह बीजेपी और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ (आरएसएस) का आयोजन है जिसे चुनावी लाभ के लिए किया जा रहा है. कांग्रेस के इस कदम ने लोकसभा चुनाव से ठीक पहले बीजेपी को बैठे-बिठाए मुद्दा दे दिया है और वह 'राम के नाम' पर कांग्रेस को जबरदस्त तरीके से घेरने जा रही है.

75 सालों में अयोध्या राम मंदिर का मुद्दा कांग्रेस पार्टी के लिए मुश्किलों भरा ही रहा है. चाहे वर्ष1949 का रहा हो या अब 2024 का। साल 1949 में 22 दिसंबर की रात, विवादित ढांचे के मुख्य गुंबद के नीचे मूर्तियां रख दी गईं. पंडित नेहरू देश के प्रधानमंत्री थे और कांग्रेस नेता गोविंद वल्लभ पंत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे. सरकार की ओर से कोशिश की गई कि मूर्तियों को इस ढांचे से निकाल दिया जाए. उस वक्त फैजाबाद के डीएम रहे केके नायर ने सुरक्षा व्यवस्था का हवाला देते हुए आदेश मानने से इनकार कर दिया और विवादित ढांचे पर ताला लगा दिया गया. उसी वक्त से बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचे का इस्तेमाल बंद हो गया.अगले ढाई दशक तक मामला कोर्ट में चलता रहा. दोनों पक्षों की ओर से अपील होती रही कि ताला खुलवाया जाए. मुस्लिम पक्ष वहां नमाज पढ़ने की मांग करता और हिंदू पक्ष ने इसे राम मंदिर बताते हुए पूजा-अर्चना करने की अनुमति मांगता रहा ।

इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने. राजनीति में अपेक्षाकृत नए राजीव के पास अब न तो उनकी मां थीं और न ही संजय गांधी जैसा भाई. ऐसे में वह अपने सलाहकारों की सलाह पर चलने लगे थे. इन्हीं की सलाह पर राजीव गांधी ने शाहबानो केस में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलटने के लिए संसद में कानून बना दिया. इस फैसले से मुस्लिम तो खुश हुए लेकिन हिंदू राजीव गांधी से नाराज हो गए थे.

तब अरुण नेहरू और अन्य सलाहकारों ने राजीव गांधी को सलाह दी कि विवादित ढांचे का ताला खुलवा दिया जाए तो हिंदू खुश हो जाएंगे.और 28 जनवरी 1986 को कांग्रेसी पृष्ठभूमि के एक वकील ने फैजाबाद की अदालत में ताला खोलने की याचिका दायर की. 1 फरवरी 1986 को ताला खोलने के आदेश दे दिए गए और सिर्फ 40 मिनट के अंदर ताले खोल भी दिए गए. जिसका लाइव टेलिकास्ट दूरदर्शन पर भी किया गया.कुछ लोगों का तो यह भी मानना है कि राजीव गांधी भव्य राम मंदिर बनवाना चाहते थे. हालांकि, वह दोबारा सत्ता में नहीं लौटे और उनकी हत्या हो गई. उसके बाद आईं तीन सरकारों में राम मंदिर आंदोलन तेज होता गया. नरसिंह राव की सरकार के समय 6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचे को गिरा दिया गया. खुद उत्तर प्रदेश के सीएम कल्याण सिंह और प्रधानमंत्री पी व्ही नरसिंह राव पर आरोप लगे कि उन्होंने जानबूझकर कोई कार्रवाई नहीं करवाई.

हिंदुत्व के मुद्दे पर सोनिया गांधी और राहुल गांधी कभी मुखर नहीं हो पाते, ऐसे में कांग्रेस आलाकमान की ओर से न्योता अस्वीकार किए जाने के बाद पार्टी के ही कई नेताओं ने इस फैसले पर सवाल उठाने लगे हैं.कई नेताओं का मानना है कि राम मंदिर के मामले पर ऐसा फैसला नहीं लेना चाहिए. वहीं, कांग्रेस की कोर टीम का मानना है कि बीजेपी और आरएसएस इस मुद्दे पर राजनीति कर रहे हैं और अगर उसके प्रमुख नेता इस कार्यक्रम में शामिल होते हैं तो यह ऐसा होगा जैसे वे इस अजेंडे को स्वीकार कर रहे हों.आखिर राजनीति विचारों की लड़ाई होती है यहाँ भी एकतरफ संघी विचारधारा है तो दूसरी तरफ गांधीवादी।

## तमिलनाडू में किस बड़े कदम की तैयारी में भाजपा

22 जनवरी को अयोध्या मे रामलला विराजेगे और भाजपा उप्र मे अपनी भारी जीत के प्रति पूर्णत- आश्वस्त हो कर अब दक्षिण विजय की तैयारी मे जुटेगी। पिछले हफ्ते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तिरुचिरापल्ली यात्रा के बाद, अटकलें तेज हो रही हैं कि पीएम दक्षिणी राज्य की किसी सीट से लोकसभा चुनाव लड़ सकते हैं.

चर्चा यह है कि प्रधानमंत्री तीन निर्वाचन क्षेत्रों- कोयंबटूर, रामनाथपुरम या कन्याकुमारी- में से किसी एक जगह से चुनाव लड़ सकते हैं, और दूसरी सीट उत्तर से होगी जो संभवतः वाराणसी या अयोध्या है. पिछले 20 सालों में, बीजेपी तमिलनाडु में केवल एक लोकसभा सीट - 2014 के लोकसभा चुनाव में कन्याकुमारी सीट जीतने में सफल रही है. 39 सांसदों के साथ, तमिलनाडु लोकसभा सीटों के मामले में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल के बाद चौथा सबसे बड़ा राज्य है.

यह देश में बीजेपी के सबसे कमजोर राज्यों में से एक भी है. 30 प्रतिशत से अधिक ईसाई आबादी वाले कन्याकुमारी में बीजेपी का ये प्रयोग कितना सफल होगा यह ईसाइयों के मध्य उनकी पहुंच पर निर्भर करेगा चर्चा तो रामनाथपुरम निर्वाचन क्षेत्र को लेकर भी जोरों पर हैं जहां बड़ी संख्या में मुस्लिम आबादी है और देश के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक रामनाथस्वामी रामेश्वरम मंदिर भी है जो हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है. 2019 के चुनावों में भाजपा यहाँ दूसरे स्थान पर रही थी .मान्यता है की रावण वध के पश्चात श्री राम ने इस मंदिर मे आकर पूजा की थी इसलिए राम मंदिर से जुड़े प्रसंगों और संदेशों को भाजपा भुना सकती है कोयंबटूर में पिछले दो लोकसभा चुनावों में बीजेपी को 30 प्रतिशत से अधिक वोट मिला है. 1990 के दशक में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का इतिहास रहा है. तमिलनाडु मे अभी माहौल बीजेपी के खिलाफ है. लेकिन पार्टी छोटे मंदिरों और सांस्कृतिक संगठनों के माध्यम से राज्य में प्रवेश करने की कोशिश कर रही है.

तो आरएसएस यहां सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेल आयोजनों आदि की मेजबानी कर अनुकूल वातावरण निर्मित करने का प्रयास कर रहा है। दूसरी ओर यहाँ इंडिया गठबंधन मजबूत बना हुआ है. डीएमके-कांग्रेस-वाम गठबंधन ने 2019 में तमिलनाडु की 39 में से 38 सीटें जीती थीं। लोकसभा में सेनगोल को स्थापित करने पर जोर देने से लेकर पीएम मोदी के लगातार तमिलनाडु दौरे और डीएमके के साथ बढ़ते वैचारिक लड़ाई , सभी संकेत बताते हैं कि बीजेपी राज्य में एक बड़ा कदम लेने की योजना बना रही है.

## राहुल गांधी की भारत न्याय यात्रा से किसकी बढ़ेगी बेचैनी

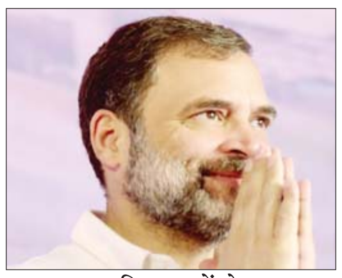

भारत जोड़ो यात्रा के बाद अब राहुल गाँधी लोकसभा चुनाव से ठीक पहले 14 जनवरी से भारत न्याय यात्रा पर निकलेंगे। मणिपुर से मुंबई तक की यात्रा में 14 राज्यों और 85 जिलों में 6200 किलोमीटर की दूरी तय की जाएगी। भारत न्याय यात्रा मणिपुर, नागालैंड, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से होकर गुजरेगी । ये वो राज्य हैं जहां कांग्रेस का पिछले दो चुनावों में प्रदर्शन बेहद ही खराब रहा। जिन राज्यों से भारत न्याय यात्रा गुजरेगी वहां से लोकसभा की 355 सीटें आती हैं।। लोकसभा चुनाव से पहले इस यात्रा का कांग्रेस के नजरिए से काफी महत्व होगा। हालांकि इस भारत न्याय यात्रा पर इंडिया गठबंधन के साथियों की भी नजर रहेगी। राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा के दौरान आर्थिक असमानता, ध्रुवीकरण और तानाशाही के मुद्दे उठाए थे, वहीं न्याय यात्रा में देश के लोगों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। भारत जोड़ो यात्रा में एकता, प्रेम और सौहार्द का संदेश फैलाने के पश्चात राहुल गांधी अब देश के लोगों के लिए न्याय मांगेंगे। राहुल गांधी इस बार जिन राज्यों से होकर गुजरेंगे उनमें से अधिकांश राज्य ऐसे हैं जहां इंडिया गठबंधन के भीतर सीटों के तालमेल को लेकर सवाल हैं। विपक्षी दलों के गठबंधन I.N.D.I.A में सीटों का बंटवारा अभी हुआ नहीं है । इसमें बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र प्रमुख रूप से शामिल है। यात्रा के पहले या बीच इंडिया गठबंधन में सीटों की बात तय होती या नहीं दोनों ही सूरत में यह देखने वाली बात होगी कि विपक्ष के दूसरे साथी इस यात्रा को कैसे देखते हैं। हाल ही में दिल्ली में इंडिया गठबंधन की बैठक में दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल और बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को 2024 में इंडिया गठबंधन की ओर से पीएम उम्मीदवार बनाए जाने का प्रस्ताव रखा। हालांकि खरगे ने इस बात पर जोर दिया था कि गठबंधन को एक पीएम चेहरा पेश करने की जरूरत नहीं है। फिलहाल जरूरी काम चुनाव जीतना है। राहुल गांधी का नाम फिलहाल गठबंधन के किसी साथी की ओर से आगे नहीं रखा जा रहा है। ऐसे में इस यात्रा के बीच ही कई सवालों के जवाब भी मिलेंगे। साथ ही यह भी तय हो जाएगा कि 2024 से ठीक पहले विपक्ष की दिशा क्या होगी।

## Aditya L1 रोजाना करेगा 'सूर्य नमस्कार'

भारत ने चांद के दक्षिण ध्रुव पर चंद्रयान-3 उतारने का इतिहास रचने के बाद नए साल पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने एक और इतिहास रच दिया है. भारत का पहला अंतरिक्ष-आधारित सोलर ऑब्जर्वेट्री, आदित्य-एल1 सैटेलाइट 6 जनवरी को शाम 4 बजे अपनी निर्धारित कक्षा में पहुंच गया है. आदित्य-एल1 को 'लैग्रेंज प्वाइंट 1' (L1) के आसपास एक 'हेलो ऑर्बिट' (में स्थापित किया गया है. 'एल1 प्वाइंट' पृथ्वी से करीब 15 लाख किलोमीटर दूर है. आदित्य-L1 के हेलो ऑर्बिट में प्रवेश करने पर इसरो प्रमुख एस सोमनाथ ने कहा, 'यह हमारे लिए बहुत संतुष्टिदायक है क्योंकि यह एक लंबी यात्रा का अंत है. लिफ्ट-ऑफ से लेकर अब तक 126 दिन बाद यह अंतिम बिंदु पर पहुंच गया है. इसलिए अंतिम बिंदु तक पहुंचना हमेशा एक चिंताजनक क्षण होता है, लेकिन हम इसके बारे में बहुत आश्वस्त थे. तो जैसा अनुमान लगाया गया था वैसा ही हुआ. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसरो के सूर्य मिशन की सफलता के लिए वैज्ञानिकों की तारीफ की है. साथ ही कहा है कि भारत ने एक और लैंडमार्क अंतरिक्ष में कायम कर दिया है. देश मानवता के लाभ के लिए विज्ञान की नई सीमाओं को और आगे तक बढ़ाएगा.

L1 प्वाइंट क्या है?

'लैग्रेंज प्वाइंट' वह क्षेत्र है जहां पृथ्वी और सूर्य के बीच गुरुत्वाकर्षण निष्क्रिय हो जाएगा. 'हेलो' कक्षा, एल 1 , एल 2 या एल 3 'लैग्रेंज प्वाइंट' में से एक के पास एक आवधिक, त्रि-आयामी कक्षा है. ISRO के मुताबिक, 'अंतरिक्ष यान को सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के लैग्रेन्जियन बिंदु 1 (एल 1) के आसपास 'हेलो ऑर्बिट' में रखने की योजना है, जो पृथ्वी से लगभग 15 लाख किमी दूर है.'

## बढ़ती बीमारियां कर रही इशारा , नए हेल्थकेयर मॉडल की आवश्यकता

आधुनिक hurry worry और curry से भरपूर जीवन शैली और बढ़ता हुआ मानसिक भावनात्मक तनाव लगातार बीमारियों के incidence और prevalence को बढ़ा रहा है । विश्व के सभी देशों की सरकार बढ़ते हुए बीमारियों के आंकड़ों से चिंतित है और लगातार मेडिकल बजट बढ़ाने के बावजूद नए-नए मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल खोलने के बावजूद लोगों को स्वस्थ रख पाना उनके लिए Challenge बन गया है । बढ़ती बीमारियों की वजह से मेडिकल बजट का खर्च हर साल बढ़ रहा है और दूसरी तरह लोगों की प्रोफेशनल Productivity and efficiency भी लगातार घट रही है । दिन प्रतिदिन कोई न कोई नई बीमारी देखने को मिल रही है और डॉक्टर ,मेडिकल स्टाफ भी overload की वजह से शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। ऐसे में present के Health Care System मे reformation की जरूरत महसूस की जा रही है और भारत ही एकमात्र ऐसा देश हो सकता है जो एक नया हेल्थ केयर मॉडल develop कर सकता है । क्योंकि भारत के पास उसका प्राचीन वैदिक चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद योग ,चक्र विज्ञान ,ध्यान का विज्ञान का खजाना है । जरूरत है इस प्राचीन विद्या को नए तरीके से नए समय के हिसाब से मॉडर्न मेडिकल सिस्टम के साथ जोड़कर एक नया हेल्थ केयर सिस्टम develop करने की। मैंने अपने 28 वर्षों के मेडिकल साइंस के अनुभव से इस बात को जाना कि जहां बात आती है disease के diagnosis की और acute management की तो Allopathy Science is one of the best science परंतु जहां बीमारियों के prevention एवं बीमारियों के reversal की बात आती है तो मेडिकल साइंस के पास कोई solution नहीं है और यह ही मेडिकल साइंस की सबसे बड़ी कमियां है हमें मेडिकल साइंस की कमियों को पूरा करने के लिए इसमें add on करना होगा हमारे प्राचीन चिकित्सा विज्ञान, वैदिक विज्ञान को जो की बीमारियों से ज्यादा स्वास्थ्य का विज्ञान है। Integration की जरूरत है disease साइंस का हेल्थ साइंस के साथ क्योंकि बीमारियां लाखों में है और हेल्थ या स्वास्थ्य केवल एक है । अगर स्वास्थ्य पर काम किया जाए तो बीमारियों पर कम काम करना पड़ेगा लेकिन यहां पर कुछ challenge भी आते हैं जिसे समझना होगा –

1. Allopathy Science के अनुसार प्राचीन वैदिक विज्ञान पूर्णतया Scientific नहीं है और उसके effects को measure नहीं किया जा सकता है।
2. कौन से वैदिक विज्ञान को add किया जाना चाहिए और कैसे add किया जाना चाहिए। ऐसा तो नहीं की Mixopathy या एक खिचड़ी की तरह यह बन जाए। तो इन challenges को मैंने भली-भांति समझा और इनका समाधान भी ढूंढा। हमारे जितने भी प्राचीन चिकित्सा, वैदिक विज्ञान है वह एक Common चीज की बात करते हैं। वह है Life Force Energy का विज्ञान, प्राणिक ऊर्जा (body bioenergy) . Body bio energy का बैलेंस health लेकर आता है और imbalance disease पैदा करता है। परंतु पहले इन body bio energy को measure ( मापने ) के लिए कोई भी machines एवं Equipment नहीं थे इसलिए यह बातें unscientific (अवैज्ञानिक) लगती थी लेकिन आज पूरा Western World ( Russia, Japan, UK, C h i n a , Germany ) हमारे इस विज्ञान को समझ कर इन पर शोधकर ऐसी machines बना रहा जिससे इन bioenergy को scientific way में qualitative way एवं quantitative way में measure किया जा सकता है। मैं इन बायो एनर्जी मशीन के द्वारा पिछले 7 सालों से पॉजिटिव हेल्थ जोन में लोगों के बायो एनर्जी इंबैलेंस को पता लगाकर उनकी मदद कर raha हूँ disease prevention & reversal में। कोई भी बीमारी एक दिन में पैदा नहीं होती वह धीरे-धीरे पनपत्ति है। और बीमारी की चार stage होती है

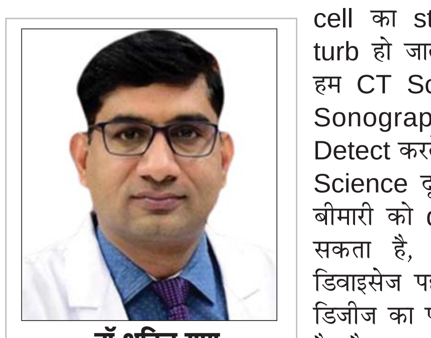

डॉ अनिल गुप्ता

MBBS, Ms, PhD, FFM

- First stage – जहां पर cell, tissue और organ की bioenergy disturb होती है।
- Second stage – जहां पर Biochemical change body में पैदा होते हैं जिन्हें हम blood test या biochemical test के द्वारा measure कर सकते हैं।
- Third Stage - Physiological जहां पर लक्षण पैदा होते हैं।
- Fourth stage – Pathological, Anatomical जहां पर organ और cell का structure disturb हो जाता है और जिसे हम CT Scan, MRI या Sonography के द्वारा Detect करते हैं। Medical Science दूसरी stage में बीमारी को diagnose कर सकता है, लेकिन क्वांटम डिवाइसेज पहले ही स्टेज में डिजीज का पता लगा सकती है और इस स्टेज में energy को change कर बीमारी को reverse किया जा सकता है । दूसरी चीज जो बीमारियां हो चुकी है उन्हें reverse करने में भी वैदिक विज्ञान मदद कर सकता है। वैदिक विज्ञान की मदद से बीमारी पैदा करने वाले मूलभूत करणों को हटाकर ,जीवन शैली में बदलाव लाकर खान-पान, रहन-सहन, आहार-विहार ,विचार-व्यवहार में बदलाव कर व्यक्ति की Bioenergy को balance में लाकर बीमारियों को reverse भी किया जा सकता है। Bioenergy Scan के benefit –

- Disease के आने से पहले ही उसका पता लगाया जा सकता है। Disease को control करने में और reverse करने में मदद की जा सकती है। Qualitative और Quantitative analysis के द्वारा Disease और health का analysis किया जा सकता है। पहले से पता लगा सकते हैं कि व्यक्ति कितना स्वस्थ है और कितना disease होने के chances है।
- Disease Reversal plan करने के लिए कौन-कौन सी pahthies की जरूरत पड़ेगी इस बात का भी पता लगाया जा सकता है।
- Bioenergy Concept में पहले से healthy व्यक्ति को और अधिक स्वस्थ और बैलेंस्ड बनाया जा सकता है उसकी bioenergy को और अधिक optimise करके ताकि उसकी productivity और efficiency भी बढ़ाई जा सके। इसलिए यह कॉन्सेप्ट बीमार एवं स्वस्थ दोनों व्यक्तियों के लिए है।

Integrated Holistic Healthcare System में प्राचीन वैदिक विज्ञान की उन पद्धतियों को integrate किया गया है जो की mind, brain, body, soul चारों चीजों पर काम करती है। यानी कि Holistic है । Integrated Holistic Healthcare System में केवल बीमारी का इलाज नहीं होता बीमार व्यक्ति का इलाज होता है। बीमार व्यक्ति के सभी aspects को समझ कर मानसिक, भावनात्मक, environmental, social, spiritual सभी factor को समझने के बाद व्यक्ति का संपूर्ण तरीके से इलाज किया जाता है। और उस बीमारी को reverse कर एक स्वस्थ जीवन शैली और स्वस्थ जीवन प्रदान किया जाता है ।

पॉजिटिव हेल्थ जोन में Unique Integrated Holistic Healthcare Approach शुरू किया गया है, जहां पर ancient वैदिक विज्ञान और Modern Medical Sciences का अद्भुत समावेश और समायोजन है। एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ इस समायोजन के द्वारा हम बहुत सारे लोगों की पिछले 7 सालों में मदद कर चुके हैं बीमारियों के रोकथाम के लिए और हो चुकी बीमारियों को रिवर्स करने के लिए | Integrated Holistic Healthcare Approach present की need है और future का एक हेल्थ केयर मॉडल है Integrated Holistic Healthcare Approach से लोगों को स्वस्थ बनाकर health के बजट को कम रखने में मदद मिलेगी। इसके अलावा लोगों की शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं बौद्धिक क्षमता की उन्नति होगी। जिस से देश और प्रदेश के विकास में व्यक्ति अपना योगदान दे पाएगा।

Positive Health Zone में, मैं डॉक्टर अनिल और मेरी पूरी टीम पिछले 7 वर्षों से लगातार शोध कर रहे हैं कि इस Holistic Healthcare System के द्वारा कैसे लोगों की जिंदगी में लाइफ फोर्स एनर्जी के बैलेंस द्वारा transformation लाकर उन्हें स्वस्थ ,मस्त और जबरदस्त बनाया जा सकता है।और लोगो को स्वस्थ बनाने की यह mission लगातार जारी है !

www.dranilinfo.com,
www.phzinfo.com

*( लेखक श्री गणेश विनायक आई हास्पिटल के डायरेक्टर एवं पॉजीटिव हेल्थ जोन के फाउंडर डायरेक्टर हैं )*

# राम जन्मभूमि के महासमर की महागाथा

**अवध नगरी अयोध्या मूलरूप से मंदिरों का शहर रहा है। कहा जाता है कि अयोध्या नगरी को भगवान श्रीराम के पूर्वज विवस्वान (सूर्य) पुत्र वैवस्वत मनु द्वारा बसाया गया था, इसलिए अयोध्या नगरी में सूर्यवंशी राजाओं का राज महाभारत काल तक रहा। अयोध्या नगरी के दशरथ महल में ही प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ। धन्य–धान्य और रत्न–आभूषणों से भरी इस नगरी की अतुलनीय छटा और खूबसूरत इमारतों का वर्णन वाल्मीकि रामायण में भी मिलता है। इसलिए तो महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या नगरी की शोभा की तुलना करते हुए इसे दूसरा इंद्रलोक कहा है।**

लेकिन भगवान श्रीराम के जल समाधि लेने के बाद अयोध्या कुछ समय के लिए उजाड़ हो गई थी। कहा जाता है कि रामजी के पुत्र कुश ने फिर से अयोध्या का पुनर्निर्माण कराया और इसके बाद सूर्यवंश की अगली 44 पीढ़ियों तक इसका अस्तित्व चरम पर रहा। इसके बाद महाभारत काल में हुए युद्ध के बाद भी अयोध्या फिर से उजाड़ हो गई।

पौराणिक कथा–कहानियों के अनुसार प्राचीन काल में भगवान श्री राम के जल समाधि लेने के बाद और महाभारत युद्ध के बाद अयोध्या के उजाड़ होने और फिर से बसने का वर्णन मिलता है। श्रीराम जन्म भूमि अयोध्या और यहां बने श्रीराम मंदिर को एक नहीं बल्कि कई बार आक्रमणों का सामना करना पड़ा। अयोध्या को नष्ट करने के लिए मुगलों द्वारा कई अभियान भी चलाए गए, मंदिर में बाबरी ढांचा खड़ा किया, भव्य मंदिर तोड़ मस्जिद बनवाई गई लेकिन प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि कभी नष्ट न हो सकी। वैसे तो अयोध्या नगरी का इतिहास त्रेतायुग से भी पुराना है, लेकिन आपको अयोध्या नगरी में विवाद से लेकर विध्वंस, निर्माण और उद्घाटन तक श्रीराम जन्म भूमि अयोध्या के करीब 500 सालों के बारे में श्रीराम जन्म भूमि निर्माण के महासमर कर महागाथा के वारे में संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है।

## श्रीराम जन्म भूमि अयोध्या का इतिहास

**अयोध्या राम जन्म भूमि देश के सबसे लंबे चलने वाले केस में एक है। राम जन्मभूमि का इतिहास बहुत पुराना है। 1528 से लेकर 2023 तक श्रीराम जन्म भूमि के पूरे 495 वर्षों के इतिहास में कई मोड़ आए। इसमें 9 नवंबर 2019 का दिन बेहद खास रहा, जब 5 जजों की संवैधानिक बेंच ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया।**

- 1528– मुगल बादशाह बाबर के सिपहसालार मीर बाकी ने विवादित जगह पर मस्जिद का निर्माण कराया। इस स्थान को लेकर हिंदू समुदाय के लोगों द्वारा यह दावा किया कि, यहां भगवान राम की जन्मभूमि है और इस स्थान पर एक प्राचीन मंदिर भी था, हिंदू पक्ष के लोगों ने मस्जिद में बने तीन गुंबदों में एक गुंबद के नीचे भगवान राम का जन्मस्थान बताया।
- 1853–1949– श्रीराम जन्म भूमि पर जहां मस्जिद का निर्माण किया गया, वहां के आसपास के कई स्थानों पर पहली बार 1853 में दंगे हुए। इसके बाद 1859 में अंग्रेजी प्रशासन ने विवादित स्थान के पास बाड़ लगा दी और मुसलमानों को ढांचे के अंदर वहीं हिंदुओं को बाहर चबूतरे के पास पूजा करने की इजाजत दे दी।
- 1949– अयोध्या श्रीराम जन्म भूमि का असली विवाद 23 सितंबर 1949 को तब हुआ, जब मस्जिद में भगवान राम की मूर्तियां मिलीं। इसे लेकर हिन्दू समुदाय के लोग कहने लगे कि यहां साक्षात भगवान राम प्रकट हुए हैं वहीं मुस्लिम समुदाय के लोगों ने आरोप लगाया कि किसी ने चुपके से यहां मूर्तियां रखीं। ऐसे में यूपी सरकार ने तुरंत मूर्तियों को वहां से हटाने के आदेश दिए लेकिन जिला मैजिस्ट्रेट केके नायर ने धार्मिक भावना को ठेस पहुंचने और दंगों भड़कने के डर से इस आदेश को लागू करने में असमर्थता जताई। इस तरह से सरकार द्वारा इसे विवादित ढांचा मानकर ताला लगा दिया गया।
- 1950– फैजाबाद के सिविल कोर्ट में दो अर्जी दाखिल हुई। इसमें एक तो विवादित भूमि पर रामलला की पूजा की इजाजत और दूसरी मूर्ति रखे जाने की इजाजत पर थी।
- 1961– यूपी सुन्नी वक्फ बोर्ड ने एक अर्जी दाखिल की और विवादित भूमि पर कब्जा और मूर्तियों को हटाने की मांग की।
- 1984– 1 फरवरी 1986 में यूसी पांडे की याचिका पर फैजाबाद के जिला जज केएम पांडे ने हिंदुओं को पूजा करने की इजाजत दे दी और ढांचे पर लगे ताले को हटाने का आदेश दिया।
- 1992– यह दिन ऐतिहासिक रहा। 6 दिसंबर 1992 को वीएचपी और शिवसेना समेत कई हिंदू संगठन के लाखों कार्यकर्ताओं ने विवादित ढांचे को गिरा दिया। इससे देशभर में सांप्रदायिक दंगे हुए और हजारों की तादाद में लोग मारे गए।
- 2002– गोधरा ट्रेन जोकि हिंदू कार्यकर्ताओं को लेकर जा रही थी, उसमें आग लगा दी गई और करीब 58 लोग मारे गए। इसे लेकर गुजरात में भी दंगे की आग भड़क गई और दो हजार से अधिक लोग इस दंगे में मारे गए।
- 2010– इलाहाबाद हाईकोर्ट ने फैसले पर विवादित भूमि को सुन्नी वक्फबोर्ड, रामलला विराजमान और निर्मोही अखाड़ा के बीच तीन बराबर हिस्सों में बांटने का आदेश दिया।
- 2011– अयोध्या विवाद पर इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी।
- 2017– सुप्रीम कोर्ट ने आउट ऑफ कोर्ट सेटलमेंट का आह्वान किया और भाजपा के कई नेताओं पर आपराधिक साजिश आरोप बहाल किए गए।
- 2019– 8 मार्च 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने मामले को मध्यस्थता के लिए भेजा और 8 सप्ताह के भीतर कार्यवाही को खत्म करने के आदेश दिए। इसके बाद 1 अगस्त को मध्यस्थता पैनल ने रिपोर्ट पेश की और 2 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट मध्यस्थता पैनल मामले में समाधान निकालने कामयाब नहीं रहे। इस बीच सुप्रीम कोर्ट में अयोध्या मामले को लेकर प्रतिदिन सुनाई होने लगी और 16 अगस्त 2019 को सुनवाई पूरी होने के बाद फैसला सुरक्षित रखा गया।
- 2019– 09 नवंबर को सुप्रीम कोर्ट के 5 जजों की बेंच ने श्रीराम जन्म भूमि के पक्ष में फैसला सुनाया वहीं 2.77 एकड़ विवादित भूमि हिंदू पक्ष को मिली और मस्जिद के लिए अलग से 5 एकड़ जमीन मुस्लिम पक्ष को मुहैया कराने का आदेश दिया गया।
- 2020– 25 मार्च 2020 को पूरे 28 साल बाद रामलला टेंट से निकलकर फाइबर मंदिर में विराजमान हुए और इसके बाद 5 अगस्त को भूमि पूजन किया गया।
- 2023– अब एक बार फिर से श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में रामलला का भव्य मंदिर बनकर तैयार हो चुका है। 22 जनवरी 2024 को रामलला के भव्य मंदिर का अभिषेक होगा। इस तरह से सालों साल चले इस विवाद का अंत होगा और रामलला की पूजा–आराधना की जाएगी।

## भारतीयता के प्रतिनिधि पुरूष है श्रीराम

**आचार्य मिथिलेश नन्दिनी शरण**

श्रीरामजन्मभूमि पर श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा हो रही है। प्रथम दृष्ट्या यह एक धार्मिक अनुष्ठान है, पर इतना भर कहने से प्राण–प्रतिष्ठा के इस प्रसंग को समग्रता में नहीं समझा जा सकता। वस्तुत: भारत के संदर्भ में धर्म शब्द का अभिप्राय अत्यंत व्यापक है। इस व्यापकता को परिभाषित करते हुए हमें धर्म विग्रह श्रीराम को देखना होगा। श्रीराम की धर्मप्राण भारत के साथ एक विशेष प्रकार की संगति है। देश के इतिहास, भूगोल संस्कृति और विश्वास में निहित जीवन बोध को श्रीराम अभिव्यक्त करते हैं। यही कारण है कि यह देश उन्हें परमार्थरूप ब्रह्म स्वीकारने के साथ ही मर्यादा पुरुषोत्तम भी मानता है। वेदों के मंत्र, रामायण से लेकर वाल्मीकि, वेदव्यास और गोस्वामी तुलसीदास तक के साधुवाद की कसौटी श्रीराम हैं। कालचक्र के साथ धर्म की जटिल होती गई परिभाषाओं को श्रीराम के बिना समझना दुरूह है। भारतीयता के नाम पर यह देश पीढ़ियों से चरित्र के जिन मूल्यों को सामने रखता आया है, श्रीराम उसके प्रतिनिधि.पुरुष हैं। यही कारण रहा कि भारत पर आघात करने की चेष्टाएं विफल रहीं। इससे स्वत: ही रामत्व की मूर्ति बनती गई। भारत–विरोधी चिंतन अपने सभी आयामों में स्वत: श्रीराम–विरुद्ध हो गया। देश जैसे इस कुंठा से ग्रस्त सा हो चला। कविताओं, कहानियों,विमर्श और आख्यानों तक भी इसका प्रभाव पहुंचा और सांस्कृतिक आत्महीनता की एक छाया सी दिशाओं में भर गई।

यही वह दौर था, जब देश की तथाकथित बौद्धिकता ने इसी कुंठा को विमर्शके केंद्र में रख दिया। श्रद्धालुओं में यह बात चल निकली कि अयोध्या कभी मुस्कुरा नहीं सकती, क्योंकि यह शापग्रस्त है। इस मिथक को टूटने में सदियां लग गईं, परंतु सत्य के वेग को किसी भांति रोक कर नहीं रखा जा सकता। मनीषियों की मनीषा, तपस्वियों का तप, संगठनों के व्यापक संघर्ष और बृहत्तर भारत के अंत:करण में पीढ़ियों से पोसी गई, शताब्दियों का ताप सहती आस्था आज उमड़ती हुई सामने आ गई है। इस असाधारण प्रसंग को भारत समेत प्राय: विश्व भर रोमांच से देख रहा है, परयह आकस्मिक नहीं है। यह मानवता की प्रथम राजधानी अयोध्यापुरी से मनुष्यता के खोए हुए मान को लौटाने की बहुत पुरानी कथा की फलश्रुति है।

'राजा रामु अवध रजधानी' का उद्घोष करने वाले गोस्वामी तुलसीदास ने 'माँगि के खाइबो, मसीत में सोइबो' कहते हुए अयोध्या के आदर्श और यथार्थ को पांच शताब्दी पहले ही स्वर दिया था। संतों, निहंगों, साचकों और श्रद्धालुओं ने इस खोई हुई अयोध्या को निरंतर खोजा। आज अयोध्या में भव्य आकार लेता श्रीरामजन्मभूमि मंदिर, प्रशस्त होते इसके मार्ग, उमड़ता हुआ जनसमुद्र और इन सबसे विकसित होता हुआ सुदृढ़ आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचा महर्षि वाल्मीकि द्वारा निरूपित अयोध्याजी को चरितार्थ करने जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने केंद्रीय सत्ता में पीढ़ियों से जमी कुंठा को धो दिया और श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा के आयोजन को देश–विदेश के भारतीयों समेत संपूर्ण मानवतावादी जगत का महोत्सव बना दिया है। यह राजनीति का चरित्रशोधन है। एक आदर्श समाज को गांधी जी ने रामराज्य कहकर परिभाषित किया तो अल्लामा इकबाल ने श्रीराम को हिंदुस्तान का गौरव मानते हुए इमामे.हिंद कहा। यह इसलिए भी विशेष अर्थ रखता है कि राष्ट्रीय गौरव के इस प्रसंग को राजनीतिक कुंठा से ग्रस्त कुछ लोग जब तिरस्कृत करना चाहते हैं तो वे वस्तुत: शिहंदोस्तां के नाज को ही नकारने का प्रवास करते हैं।

आज उभरती हुई अयोध्या को देखते हुए यह भी याद कर लेना चाहिए कि जिस अयोध्या को वेद स्वर्ग की आभा से युक्त देवताओं की पुरी कहते हैं, दशकों तक उस अयोध्या का नाम गूगल सर्च में डालने पर स्वाभाविक सुझाव के रूप में 'अयोध्या वर्डिक्ट' दिखाई पड़ता था। आज उसी अयोध्या के नाम पर दिव्य दीपोत्सव और श्रीरामजन्मभूमि निर्माण से प्रकट असंख्य मुग्धकारी छवियां सामने आ जाती हैं। हिंदू संस्कृति और उसके मूल सनातन धर्म की पहली पुरी अयोध्या अपनी सांस्कृतिक पहचान में पुनर्प्रतिष्ठित हो रही है।

यह उन महाराज मनु की राजधानी है, जिनके संबंध से मानव जाति की पहचान है। यह उन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि है जिनकी जीवनयात्रा निर्वासन से प्रारंभ होकर निषाद, किरात, कोल–भील, वनवासी, गिरिवासी तथा ऋषि–मुनियों से होते हुए वानर–भालुओं तक पहुंचती है और उनमें स्नेह संचार करती हुई अंतत: रामराज्य का आकार लेती है। श्रीराम का चरित्र सद्भाव और सामंजस्य की उस संस्कृति को व्यक्ति की चेतना में जागृत करता है, जो भारतीयता का प्राण तत्व है। यह एक नगर या तीर्थ भर का विकास नहीं है, यह उस विश्वास की विजय है जिसे 'सत्यमेव जयते' के रूप में भारत के राजचिह्न में अंगीकार किया गया है। लोक की बहुआयामी चेतना को एकात्म करने, सदियों की निष्ठा को सम्मान देने और इन सबके माध्यम से एक संप्रभु राष्ट्र की लोकोन्मुख प्रतिज्ञा को पूरा करने का यह अप्रतिम उदाहरण है। योगी आदित्यनाथ की अयोध्या को लेकर प्रतिबद्धता और प्रधानमंत्री की इसके प्रति उत्कंठा का किसी राजनीतिक तर्क से अवमूल्यन नहीं किया जा सकता।

धरती का वैकुंठ और त्रेता की विश्वप्रसिद्ध महापुरी अयोध्या का पुनर्नवीकरण इस देश को उसके इतिहास.भूगोल की गरिमा में पहचानने का असाधारण अवसर है। यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आध्यात्मिक अनुष्ठान है जिसे राष्ट्रीय गौरव के रूप में देखा जाना चाहिए। शताब्दियों से आस्था की केंद्र अयोध्यापुरी का पुनरुत्थान श्रीराम के उस मनुष्य भाव का सत्कार है, जिसकी शिक्षा देने के लिए उनका अवतार हुआ।

*(लेखक अयोध्या स्थित सिद्धपीठ श्रीहनुमाननिवास के महंत है)*

## भारत का महा तीर्थ
# अयोध्या का राम मन्दिर

भगवान रामलला का मंदिर लगभग तैयार हो चुका है। राम मंदिर भारत का सबसे बड़ा मंदिर बनने जा रहा है। मंदिर का लोकार्पण 22 जनवरी 2024 को तय है। इस मंदिर की दिव्य और भव्य छबि ऐसे ही नहीं है। 70.5 एकड़ में फैले विशाल मंदिर में 44 द्वार (गेट) होंगे। इनमें से 18 द्वार दरवाजों से युक्त होंगे। इनमें भी 14 स्वर्णजड़ित होंगे। चार दरवाजे स्टोर के हैं, जिन्हें वार्निश कर आकर्षक बनाया गया है।

मंदिर के डिजाइन व निर्माण से जुड़े इंजीनियरों के मुताबिक भूतल पर लगने वाले दरवाजे लकड़ी के बने हैं, जिसे हैदराबाद की कंपनी ने तैयार किया है। राममंदिर तक पहुंचने के लिए तीन पथ बनाए जा रहे हैं– रामजन्मभूमि पथ, भक्ति पथ व राम पथ।

मगर, सभी यात्रियों को प्रवेश एक ही द्वार से मिलेगा। मंदिर जितना भव्य तैयार किया जा रहा है, श्रद्धालुओं की सहूलियत का भी उतना ही ध्यान रखा जा रहा है। उनकी सहूलियत के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट सुग्रीव किला के गेटवे दो के बगल में एक सुविधा केंद्र बनाया जा रहा है।

**राममंदिर के लिए पहुंचें सुग्रीव किला**

निर्माण से जुड़े एक इंजीनियर ने बताया कि तीर्थयात्रियों को राममंदिर जाने के लिए सुग्रीव किला आना होगा। भक्तों को बिड़ला धर्मशाला के सामने तैयार किए जा रहे द्वार से सुग्रीव किला होते हुए प्रवेश मिलेगा।

इंजीनियर के मुताबिक, सनातन धर्म के पुराने मंदिरों में प्रवेशद्वार कुछ दूरी पर बनाए गए हैं। यहां भी जन्मभूमि की परिधि से 600 मीटर पहले बिड़ला धर्मशाला के सामने 35 फुट ऊंचे दो गेटवे बनाए गए हैं। गेटवे से अंदर आने पर दोनों तरफ फुटपाथ के साथ 75 फुट चौड़ी रोड बनाई गई है। इस पथ से तीर्थयात्री मंदिर की ओर जाएंगे। इस पथ का फर्श सैंडस्टोन से बनाया गया है, जिस पर 9 कैनोपी बनाई गई हैं। कैनोपी के बाद बाएं हाथ पर 16 काउंटर के साथ बैग स्कैनर बन रहे हैं। यहां से सुविधा केंद्र के सामने पहुंचेंगे। यहां बैगेज काउंटर के बगल से दोबारा इसी पथ पर आ जाएंगे और अमावा मंदिर के पीछे पहुंच जाएंगे। यहां से निकलने के बाद राममंदिर के दर्शन कर सकेंगे।

## देश में कहां है सबसे बड़ा मंदिर

देश में फिलहाल सबसे बड़ा मंदिर तमिलनाडु में है। तिरूचिरापल्ली में स्थित ये मंदिर रंगनाथस्वामी का मंदिर है। द्रविड़ शैली में इस मंदिर का निर्माण हुआ है। इसमें कई छोटे–छोटे मंदिर मौजूद हैं। मंदिर की वेबसाइट बताती है कि ये पूरा मंदिर 156 एकड़ तक फैला हुआ है, यानी करीब चार किलोमीटर तक मंदिर का परिसर है। इसकी ऊंचाई 236 फीट तक है, वहीं राम मंदिर की बात करें तो इसकी ऊंचाई 161 फीट होगी और ये करीब 108 एकड़ में फैला होगा।

ये मंदिर दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर होने का भी दावा करता है, इसका कारण ये है कि दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर कंबोडिया का अंगरकोट वाट मंदिर है जो करीब 600 से ज्यादा एकड़ में फैला हुआ है लेकिन ये मंदिर क्रियाशील नहीं है। यही वजह है कि रंगनाथस्वामी मंदिर सबसे बड़ा मंदिर होने का दावा करता है।

### यहां बन रहा दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर

अब भारत में एक ऐसा मंदिर भी बन रहा है, जो दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर होगा। ये मंदिर पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के मायापुर में बनाया जा रहा है। ये मंदिर साल 2009 से बनाया जा रहा है जो 2024 तक बनकर तैयार हो जाएगा। ये दुनिया का सबसे बड़ा वैदिक मंदिर होगा। ये मंदिर परिसर करीब 28 लाख वर्गमीटर में फैला हुआ है।

# जाति का कॉम्बिनेशन, नए-पुराने चेहरे का संतुलन, साय मंत्री मण्डल

**डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय**

छत्तीसगढ़ में बीजेपी सरकार बनने के दस दिन बाद मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कैबिनेट का गठन कर मंत्रिमंडल विस्तार किया . नौ विधायको ने मंत्री पद की शपथ ली कैबिनेट में नए और पुराने चेहरों को मौका देकर संतुलन बनाने के साथ जातीय समीकरण साधने और क्षेत्रीय बैलेंस बनाने की पूरी कोशिश बीजेपी नेतृत्व ने की है ताकि 2024 में जीत का फॉर्मूला दोहरा सके. बीजेपी ने जिस तरीके से छत्तीसगढ़ में सीएम की रेस में चल रहे नामों पर चौंकाते हुए फैसला लिया, वैसा ही दांव कुछ मंत्रिमंडल को लेकर किया है. मुख्यमंत्री साय के मंत्रिमंडल में बृजमोहन अग्रवाल, ओपी चौधरी, रामविचार नेताम, केदार कश्यप, श्याम बिहारी जायसवाल, लक्ष्मी रजवाड़े, टंक राम वर्मा, दयाल दास बघेल और लखन लाल देवांगन को शामिल किया गया . साय कैबिनेट के जरिए बीजेपी ने छत्तीसगढ़ के जातीय समीकरण को साधने की कवायद की है. मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आदिवासी समुदाय से हैं जबकि डिप्टी सीएम अरुण साव ओबीसी से हैं और दूसरे डिप्टी सीएम विजय शर्मा ब्राह्मण समुदाय से हैं. 9 विधायकों में सबसे ज्यादा संख्या ओबीसी समुदाय की है . इसके बाद दो आदिवासी, एक दलित और एक सामान्य वर्ग से मंत्री बनाये गए है. बीजेपी ने छत्तीसगढ़ कैबिनेट में पुराने और नए चेहरों के तवज्जे देकर एक बैलेंस बनाने की कोशिश की है ताकि अनुभव के साथ भविष्य की लीडरशिप स्थापित करने का दांव चला है. बृजमोहन अग्रवाल, रामविचार नेताम, केदार कश्यप और दलायदाल बघेल जैसे वरिष्ठ नेताओं को जगह दी गई है, जो पिछली बीजेपी सरकारों में मंत्री के रूप में काम कर चुके है. वहीं, ओपी चौधरी, टंकराम वर्मा और लक्ष्मी राजवाड़े जैसे नए चेहरों को कैबिनेट में शामिल किया गया है, जो पहली बार के विधायक बने हैं. श्याम बिहारी जायसवाल और लखन देवांगन दूसरी बार विधायक बने हैं, जिन्हें मंत्री बनाया गया है . छत्तीसगढ़ की 12 सदस्यीय कैबिनेट में चार पुराने चेहरों को जगह दी है तो 8 नए चेहरे शामिल किए हैं. इस तरह से पुराने और नए चेहरों को साथ बीजेपी ने बैलेंस बनाने का दांव चला है ताकि एक सियासी संतुलन बना रहे. साय कैबिनटे के जरिए बीजेपी 2024 के लोकसभा चुनाव जीतने की रुपरेखा बनाई है. राज्य में 11 लोकसभा सीटें है और बीजेपी ने 2019 में 9 सीटें जीती थी, लेकिन इस बार उसकी नजर सभी 11 सीटें जीतने पर है. यही वजह है कि सरकार से लेकर कैबिनेट गठन तक में जातीय समीकरण का खास ख्याल रखा जा रहा है. राज्य में सबसे बड़ी आबादी ओबीसी की है, जिसकी वजह से ही कैबिनेट सबसे ज्यादा तवज्जे ओबीसी नेताओं को दी गई है. इसके बाद आदिवासी समुदाय से सीएम और दो मुख्यमंत्री बनाए गए हैं. सवर्ण वोटों को देखते हुए बीजेपी ने एक डिप्टीसीएम और एक मंत्री बनाए हैं और कैबिनेट में दलित समुदाय से एक ही सदस्य को स्थान दिया गया है. पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह को स्पीकर का पद दिया है, लेकिन कैबिनेट में किसी भी राजपूत समुदाय को जगह नहीं मिली तो किरण देव सिंह को बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई है. आदिवासी समुदाय को सत्ता तो राजपूत समुदाय को प्रदेश संगठन का जिम्मा देकर जातीय संतुलन बनाने की कोशिश के साथ बीजेपी ने क्षेत्रीय बैलेंस बनाने का भी दांव चलते हुए बस्तर से लेकर रायपुर तक के नेताओं को कैबिनेट में जगह दी गई है.

### बृजमोहन अग्रवाल

11 मई 1959 में रायपुर में जन्मे बृजमोहन अग्रवाल बीजेपी के कद्दावर नेता हैं. वो लगातार आठवीं बार चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे हैं. एबीवीपी से राजनीति शुरू करने वाले अग्रवाल साल 1980 में पहली बार विधायक बने थे. अग्रवाल छत्तीसगढ़ सरकार में गृह, जेल, संस्कृति और पर्यटन, राजस्व, कानून, स्कूल शिक्षा, लोक निर्माण विभाग, संसदीय, कृषि मंत्री के अलावा कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों का जिम्मा संभाल चुके हैं. बृजमोहन अग्रवाल रायपुर दक्षिण सीट से विधायक हैं

### राम विचार नेताम

62 वर्षीय रामविचार नेताम का जन्म 1 मार्च 1961 को सरगुजा के सनावल गांव में हुआ था. नेताम पहले बैंक में काम करते थे और बाद में शिक्षक बन गये थे. 1990 में नेताम पहली बार विधायक बने थे. इसके बाद 1993, 1998, 2003 में पाल सीट से और परिसीमन के बाद 2008 और 2023 में रामानुजगंज से विधायक चुने गये. आदिवासी नेता को बीजेपी ने 2016 में राज्यसभा भेज दिया था, जहां वो 2022 तक उच्च सदन के सदस्य रहे. नेताम पूर्वत्तर रमन सिंह सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं.

### ओपी चौधरी

42 साल के पूर्व आईएएस अधिकारी ओपी चौधरी का जन्म 2 जून 1981 को हुआ था. बीएससी भिलाई से करने के बाद चौधरी का 2005 में आईएएस में चयन हुआ था. लेकिन 2018 में वो जिलाधिकारी के पद से इस्तीफा देकर राजनीति में आ गये और बीजेपी में शामिल हो गये. पार्टी ने उन्हें उसी साल रायगढ़ की खरसिया सीट से विधानसभा चुनाव में उतार दिया, जहां वो कांग्रेस प्रत्याशी उमेश पटेल से 16, 967 मतों से हार गये. हालांकि, 2023 के चुनाव में बीजेपी ने चौधरी को रायगढ़ सीट से मैदान में उतारा, जहां से जीतकर वो पहली बार विधायक बने हैं.

### दयालदास बघेल

दयालदास बघेल का जन्म 1 जुलाई 1954 को हुआ था. वो पहली बार 1998 में बीजेपी के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़े थे,लेकिन हार गये. हालांकि, 2003 में वो मारो से विधायक का चुनाव जीत गये. इसके बाद 2008, 2013, 2018, 2023 में वो नवलगढ़ सीट से चुनाव जीते. वो 2015 से 2018 तक रमन सिंह सरकार में सांस्कृति और पर्यटन विभाग के मंत्री भी रहे हैं. वर्तमान में गुरु रुद्र को हराकर बघेल विधायक बने हैं.

### केदार कश्यप

49 साल के केदार कश्यप का जन्म 5 नवंबर 1974 को बस्तर (तात्कालीक एमपी) में हुआ था. वो 2003 में भानपुरी सीट से विधायक बने थे और रमन सिंह सरकार में राज्य मंत्री बन गये. इसके बाद 2008 और 2013 में वो नारायणपुर से चुनाव जीतकर रमन सरकार में मंत्री बने. लेकिन 2018 में वो चंदन कश्यप के हाथों चुनाव हार गये. हालांकि, 2023 में वो कश्यप नारायणपुर सीट से दोबारा चुनाव जीत गये.

### लखनलाल देवांगन

लखनलाल देवांगन (61) का जन्म 12 अप्रैल 1962 को कोरबा (तात्कालीक एमपी) में हुआ था. वो 2005 से 2010 तक कोरबा नगर निगम के मेयर थे. इसके बाद 2013 में वो कटघोरा से विधायक चुने गये और रमन सिंह सरकार में मंत्री बने. हालांकि, 2018 में वो चुनाव हार गये. लेकिन 2023 में बीजेपी ने उन्हें कोरबा सीट से मैदान में उतारा, जहां उन्होंने मंत्री जय सिंह अग्रवाल को 25, 629 वोटों से हरा दिया

### टंकराम वर्मा

बलौदाबाजार से पहली बार विधायक बने टंकराम वर्मा शिक्षक की नौकरी छोड़कर राजनीति में आए हैं. वे सबसे पहले तिल्दा से जिला पंचायत सदस्य चुने गए, फिर रायपुर जिला पंचायत में उपाध्यक्ष बने. टंकराम वर्मा पिछले 30 वर्षों से सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय हैं. विधायक बनने से पहले वे बलौदा बाजार जिला ग्रामीण बीजेपी अध्यक्ष थे

### श्याम बिहारी जायसवाल

कोरिया जिले के निवासी श्याम बिहारी जायसवाल का जन्म 1976 में हुआ था. पेशे से राइस मिल चलाने वाले जायसवाल 2010 में जिला पंचायत अध्यक्ष चुने गये थे. 2013 में वो पहली बार महेंद्रगढ़ सीट से चुनाव जीतकर विधायक बने थे. लेकिन 2018 में हार गये. इस बार श्याम बिहारी जायसवाल ने कांग्रेस प्रत्याशी रमेश सिंह को 11, 880 वोटों से हरा दिया है.

### लक्ष्मी राजवाड़े

31 वर्षीय लक्ष्मी राजवाड़े सरगुजा संभाग के भटगांव से विधायक चुनी गई हैं. उन्होंने दो बार के विधायक रहे पारस नाथ राजवाड़े को करीब 44 हजार वोटों के बड़े अंतर से हराया है. लक्ष्मी प्रदेश की सबसे युवा मंत्रियों में से एक हैं. लक्ष्मी राजवाड़े कृषक परिवार से है. हायर सेकेंडरी तक शिक्षा हासिल करने वाली लक्ष्मी राजवाड़े मूलत: सूरजपुर जिले के ग्राम बीरपुर, सिलफिली तहसील लटोरी की निवासी हैं. वो पहली बार विधायक बनी हैं.

# नए कानून में डॉक्टरों के लिए हल्की सजा का प्रावधान क्यों?

भारतीय संसद ने इस हफ्ते नए भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) को पारित कर दिया, जो पुराने भारतीय दंड संहित (आईपीसी) का स्थान लेगा। इस बिल में एक बदलाव है जो डॉक्टरों के लिए राहत की बात हो सकती है, लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि यह जरूरी नहीं था। बीएनएस की धारा 106 में लापरवाही से हुई मौत के लिए अधिकतम 5 साल की जेल और जुर्माना का प्रावधान है। हालांकि, इलाज में लापरवाही के मामले में इस सजा को कम करके अधिकतम दो साल की जेल और जुर्माना कर दिया गया है।डॉक्टरों की मांग गृह मंत्री अमित शाह ने बताया कि यह बदलाव भारतीय मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के अनुरोध पर किया गया है।

### डॉक्टरों की सुरक्षा-

मेडिकल नेग्लिजेंस कानून की तीन धाराओं के तहत आती है। इन धाराओं की व्याख्या कोर्ट के फैसलों से हुई है, जिनमें दो सुप्रीम कोर्ट के महत्वपूर्ण फैसले शामिल हैं।

### उच्च मानक-

कोर्ट के फैसलों ने डॉक्टरों को लापरवाही के झूठे आरोपों से बचाने के लिए कई सुरक्षा कवच दिए हैं। एक महत्वपूर्ण फैसले में मेडिकल नेग्लिजेंस और पेशेवर लापरवाही के बीच अंतर बताया गया है। इसमें कहा गया था कि थोड़ी लापरवाही या गलत फैसला लापरवाही का सबूत नहीं है। इन सिद्धांतों को दो महीने पहले सुप्रीम कोर्ट के एक अन्य फैसले में दोहराया गया था।

### विशेषज्ञता जरूरी-

मेडिकल प्रक्रियाओं में विशेषज्ञता के कारण डॉक्टरों को मुकदमे दर्ज होने से भी बचाया गया है। उदाहरण के लिए, बिना किसी योग्य डॉक्टर की राय के कोई निजी शिकायत दर्ज नहीं की जा सकती। अगर शिकायत दर्ज हो भी जाती है तो जांच अधिकारी को भी अलग से चिकित्सकीय राय लेनी पड़ती है। डॉक्टरों की गिरफ्तारी अपवाद है, नियम नहीं।

### बहस का मुद्दा-

मौजूदा कानून और कोर्ट के फैसले पहले से ही डॉक्टरों को लापरवाही के आरोपों से काफी सुरक्षा देते हैं। लापरवाही का मामला बनाना मुश्किल है और सफलतापूर्वक मुकदमा चलाना और भी मुश्किल। ऐसे में एक दुर्लभ मामले में जहां डॉक्टर को लापरवाही का दोषी पाया जाता है, वहां उनके लिए सजा कम करने की आईएमए की मांग का कोई मजबूत आधार नहीं दिखता है। शायद भविष्य में बीएनएस में एक और संशोधन के जरिए इस पर पुनर्विचार किया जाए।

## संपादकीय

### आदित्य का सूर्य नमस्कार

भारतीय संस्कृति में हम सूर्य को 'आराध्य देव' मानते और पूजते आए हैं। बाल हनुमान और सूर्य की 'मिथकीय कहानी' आपने भी सुनी और पढ़ी होगी, लेकिन वैज्ञानिकों की जिज्ञासाओं, प्रयोगों और अनुसंधानों की सीमा अनंत है। वैज्ञानिक भी 'सूर्य नमस्कार' करते हैं, लेकिन वे सूर्य के भीतर के यथार्थ को भी जानना चाहते हैं। यही विज्ञान का मर्म है। इस संदर्भ में भारत के इसरो का 'आदित्य एल-1' सौर मिशन अपनी मंजिल तक पहुंचा है, यकीनन यह एक असाधारण और ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह इसरो का प्रथम प्रयोग है, जिसने 'लैंग्रेज प्वाइंट-1' तक पहुंच कर और अपनी कक्षा में स्थापित होकर अंतरिक्ष विज्ञान में एक और अध्याय जोड़ दिया है। अब भारत इस सफल प्रयोग के बाद अमरीका और जापान सरीखे देशों की जमात में शामिल हो गया है। 'चंद्रयान-3' और 'आदित्य एल-1' के सफल मिशनों के बाद भारत को 'अंतरिक्ष राष्ट्र' कहा जाने लगा है। नासा भी हमारे वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के हुनर को सलाम करने लगा है और अब सभी की निगाहें 'गगनयान' मिशन पर लगी हैं। मिशन के यान ने एल-1 तक पहुंचने में 15 लाख किलोमीटर की दूरी तय की है। यह दूरी पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी का मात्र एक फीसदी ही है। कल्पना करें कि सूर्य पृथ्वी से कितनी दूर है। उसके बावजूद वह ऊर्जा और प्राणीय जीवन का मुख्य स्रोत है। आदित्य मिशन अगले 5 सालों तक सूर्य और उसकी गतिविधियों का अध्ययन करेगा। हररोज 1440 चित्र पृथ्वी पर भेजेगा। इस निष्कर्ष तक पहुंचने के प्रयास करेगा कि सूर्य के भीतर की हलचलें किस सीमा तक पृथ्वी को प्रभावित करती हैं।

मिशन पर 380 करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए गए हैं, लेकिन मिशन के पेलोड सूर्य के जिन अनसुलझे रहस्यों को बेनकाब कर विश्व के सामने पेश करेंगे, वह बेमिसाल और अमूल्य कोशिश होगी। मिशन यान के डेक पर 'मैग्नेटोमीटर' लगा है, जिसका काम गुरुत्वाकर्षण की जानकारी जमा करना है। हालांकि एल-1 ऐसा बिंदु है, जहां सूर्य, ग्रह और तारों का गुरुत्वाकर्षण प्रभावहीन होता है, लिहाजा अध्ययन के लिए इसरो ने इस स्थान को चुना। यहीं से सूर्य की गतिविधियों पर लगातार निगाह बनी रहेगी। यह उपकरण सौर गतिविधियों की जानकारी भी जुटाएगा और सूर्य पर चलने वाली हवाओं का भी अध्ययन करेगा। सूर्य की लपटों को समझने का दायित्व 'हेलियोज' का है। सूर्य की कुल ऊर्जा और तीव्रता को भी समझा जा सकेगा। सूर्य पर हवा में मौजूद कणों का पता लगाने के लिए भी उपकरण है। सोलर अल्ट्रावॉयलेट इमेजिंग टेलीस्कोप पेलोड को पराबैंगनी रेंज के पास तस्वीरें लेने के लिए डिजाइन किया गया है। यह सौर विकिरण को भी मापेगा। सॉफ्ट एक्सरे स्पेक्ट्रोमीटर को भी पेलोड के तौर पर ले जाया गया है। यह एक तारे की तरह सूर्य का अध्ययन करने की क्षमता रखता है। यह सॉफ्ट एक्सरे प्रवाह को मापने का भी काम करेगा। 'प्लाज्मा एनालाइजर पैकेज फॉर आदित्य' (पापा) पेलोड को सौर ऊर्जा को समझने के लिए डिजाइन किया गया है। यह सूर्य पर चलने वाली हवाओं और उनकी संरचना को समझने में सक्षम है। सूरज पर मौजूद इलेक्ट्रॉन्स और भारी आयन की दिशा का पता भी लगाएगा। बेशक 'आदित्य एल-1' अंतरिक्ष विज्ञान और मिशन के संदर्भ में 'मील का पत्थर' है। जिस देश को सांप-सपेरों और गोबर वाला देश माना जाता था, आज वही देश अमरीका, जापान, रूस सरीखे देशों के अंतरिक्ष अनुसंधानों से होड़ ले रहा है। पूरे अभियान के दौरान हमारा मिशन अध्ययन में जुटा रहेगा।

# 30 साल के विवेकानंद ने 54 साल के जमशेदजी टाटा को दिए थे 2 आइडिया, और बदल गया भारत का इतिहास

**विष्णु शर्मा**

पीएम मोदी ने स्वामी विवेकानंदजी के शिकागो भाषण की 125वीं सालगिरह पर एक कार्यक्रम में जिक्र किया था कि कैसे विवेकानंदजी ने मेक इन इंडिया का आव्हान करते हुए जमशेदजी टाटा को इसके लिए प्रेरणा दी थी। आज विवेकानंद के दिए ऐतिहासिक भाषण को 126 साल हो गए हैं। विवेकानंद के इस भाषण की पूरी दुनिया दीवानी हो गई थी। यही वह भाषण था जिसने भारत की दार्शनिक मेधा, गूढ़ हिंदू धर्म को संक्षिप्त रूप से लेकिन प्रभावी तरीके से पूरी दुनिया के सामने पहुंचाया था।

बहरहाल, भाषण के अलावा विवेकानंद कई रूपों में भी याद किए जाते हैं। पिछले साल विवेकानंद के शिकागो में दिए भाषण को 125 साल होने पर पीएम मोदी ने भी याद किया गया। आइए जानते हैं क्या थी वह घटना जिसका जिक्र मीडिया में चर्चा में आ गया था।

दरअसल, ये बात 1893 की है, जब विवेकानंदजी वर्ल्ड रिलीजन कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के लिए अमेरिका जा रहे थे और उसी शिप 'एसएस इम्प्रेस ऑफ इंडिया'पर सवार थे, जमशेदजी टाटा। शिप बेंकूवर जा रहा था। वहां से विवेकानंद को शिकागो के लिए ट्रेन लेनी थी। उस वक्त तीस साल के युवा थे विवेकानंद और 54 साल के थे जमशेदजी टाटा, उम्र में इतने फर्क के बावजूद दोनों ने काफी समय साथ गुजारा।

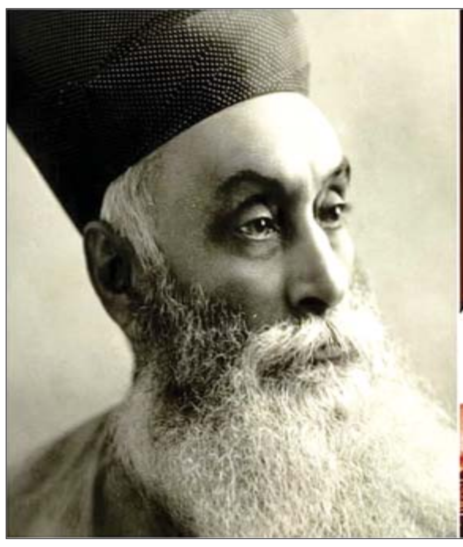

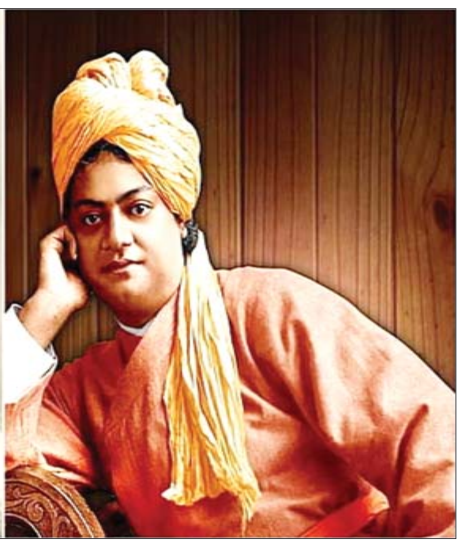

### क्या बातें की थी विवेकानंद ने?

इस शिप यात्रा के दौरान कई मुद्दों पर स्वामी विवेकानंद और जमशेदजी टाटा में चर्चा हुई। टाटा ने बताया कि वो भारत में स्टील इंडस्ट्री लाना चाहते हैं। तब स्वामी विवेकानंद ने उन्हें सुझाव दिया कि टेक्नोलॉजी ट्रांसफर करेंगे तो भारत किसी पर निर्भर नहीं रहेगा, युवाओं को रोजगार भी मिलेगा। तब टाटा ने ब्रिटेन के इंडस्ट्रियलिस्ट से टेक्नोलॉजी ट्रांसफर की बात की, लेकिन उन्होंने ये कहकर मना कर दिया कि फिर तो भारत वाले हमारी इंडस्ट्री को खा जाएंगे। तब टाटा अमेरिका गए और वहां के लोगों से टेक्नोलॉजी ट्रांसफर का भी समझौता किया। लोग बताते हैं कि इसी से टाटा स्टील की नींव पडी और जमशेदपुर मे पहली फैक्ट्री लगी। इस बात का जिक्र आज भी टाटा बिजनेस घराने से जुड़ी वेबसाइट्स पर मिल जाता है। इस पूरी मुलाकात की जानकारी स्वामीजी ने अपने भाई महेन्द्र नाथ दत्त को पत्र लिखकर दी थी।

### जमशेद जी हैरान थे विवेकानंद को देखकर

जमशेदजी टाटा भगवा वस्त्रधारी उस युवा के चेहरे का तेज और बातें सुनकर काफी हैरान थे। भारत को कैसे सबल बनाना है इस पर उनकी राय एकदम स्पष्ट थी, ना केवल आर्थिक क्षेत्र में बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी। विवेकानंद ने एक और काफी अहम प्रेरणा जमशेदजी टाटा को इस यात्रा के दौरान दी। वो थी भारत में एक टॉप लेवल की यूनीवर्सिटी खोलना जहां से वर्ल्ड लेवल के स्टूडेंट्स देश भर में निकलें, जिसमें ना केवल साइंस की रिसर्च हो बल्कि ह्यूमेनिटी की भी पढ़ाई हो। टाटा ने दोनों ही बातों को गंभीरता से लिया भी, उसके बाद टाटा अपने रास्ते पर और स्वामी अपने रास्ते पर। इस मुलाकात में दो बातें टाटा ने स्वामीजी से समझीं, एक गरीब भारतीय युवा को भरपेट खाना मिल जाए और दूसरी शिक्षा मिल जाए तो वो देश की तकदीर बदल सकता है, और टाटा ने रोजगार और शिक्षा को अपना मिशन बना लिया।

### ये लिखा था ब्रिटेन के अखबारों में

हालांकि दोनों की ये पहली मुलाकात थी, लेकिन टाटा उनसे काफी प्रभावित हुए। स्वामी जी का सम्मान टाटा की नजरों में तब और भी बढ़ गया, जब ब्रिटेन के अखबारों ने उनके भाषण के बाद लिखा कि ' 'After listening him we find how foolish it is to send missionaries to his country."। शिकागो भाषण के बाद विवेकानंद के चर्चे पूरे यूरोप और अमेरिका में होने लगे, वहां से वो इंग्लैंड चले गए, जहां उन्होंने कई लैक्चर वेदांत पर दिए। स्वामीजी 1897 में भारत आए और जब वो लौटे तो लोग उनकी घोडागाड़ी में से घोड़े निकालकर खुद जुत गए, ऐसे स्वागत से अभिभूत हो गए स्वामी जी। स्वामीजी ने भारतवासियों में इतना आत्मविश्वास बढ़ा दिया था कि हर कोई उन्हें सुनने को उतावला था। इधर जमशेदजी टाटा ने अपनी जिंदगी के चार मिशन बना लिए थे, एक स्टील मैन्युफैक्चरिंग यूनिट खोलना, एक विश्व स्तर की यूनीवर्सिटी शुरू करना, एक बड़ा होटल खड़ा करना और एक हाइड्रो इलैक्ट्रिक प्लांट बनाना। हालांकि होटल ताज उनके सामने ही 1903 में बनकर तैयार हो चुका था बाकी तीनों सपने उनके बाद पूरा हो पाए।

# क्रिप्टो की बढ़ती लोकप्रियता के बीच ठगों के जाल में फंस रहे पढ़े-लिखे लोग

**सतीश सिंह**

डिजिटल लेन-देन के दौरान तो लोग ठगी के शिकार हो ही रहे हैं, अब ठग क्रिप्टो के जरिये पैसे को चौगुना और पांच गुना करने का लालच देकर भी लोगों को ठग रहे हैं। क्रिप्टो के जरिये ठगी का शिकार बनने वाले अधिकांश लोग पढ़े-लिखे हैं। इन ठगों का अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क है, जिसका संचालन भारत से किया जा रहा है। ठगी के लिए टेलीग्राम या व्हाट्सएप ग्रुप का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। क्रिप्टो से की जा रही ठगी में ज्यादातर चीनियों की लिप्तता है। इसका कारण यह है कि वहां 2016 की तुलना में 2023 में कामगारों के वेतन में उल्लेखनीय कमी आई है, साथ ही, बेरोजगारी भी बढ़ रही है।

क्रिप्टो करेंसी एक प्रकार की डिजिटल मुद्रा है, जो भौतिक रूप में उपलब्ध नहीं होती। इसे किसी टकसाल में ढाला नहीं जा सकता, इसलिए इसका लेन-देन दूसरी मुद्राओं की तरह वैधानिक नहीं है। इस पर नियंत्रक का किसी तरह का कोई नियंत्रण नहीं होता है। इसके अधिकांश उपयोगकर्ता गुमनाम रहकर इसका लेन-देन करते हैं। बिटक्काइन, कारडानो, इथेरियम, रिपल, लिटेक्काइन, स्टीम, डैश, डोजेक्काइन आदि क्रिप्टो करेंसीज हैं। इनमें बिटक्काइन सबसे लोकप्रिय है। यूरो, अमेरिकी डॉलर, पाउंड आदि की तुलना में क्रिप्टो करेंसी के मूल्य में तेजी से इजाफा हो रहा है।

क्रिप्टो से ठगी में पहले ऐप या पोर्टल पर निवेशकों का खाता खुलवाया जाता है। शुरू में निवेशकों द्वारा निवेश की गई छोटी रकम को दोगुना या तिगुना कर दिया जाता है। भरोसा जीतने के बाद निवेशकों को बड़ी रकम जमा करने को कहा जाता है। जैसे ही निवेशक वॉलेट में बड़ी रकम जमा करते हैं, उसे तुरंत दूसरे खाते में अंतरित कर दिया जाता है या फिर होल्ड लगा दिया जाता है। आम तौर पर ठगी गई रकम विदेश भेज दी जाती है। ऐसे लोग धन शोधन (एएमएल) और काउंटर फाइनेंसिंग ऑफ टेररिज्म (सीएफटी) में भी लिप्त होते हैं। वित्त मंत्रालय ने बाइनेंस समेत कई दोषी क्रिप्टो एक्सचेंज को इस मामले में नोटिस दिया है।

**ठगी के लिए इस्तेमाल किए जा रहे यूआरएल को ब्लॉक करने की दिशा में भी सरकार काम कर रही है। अपने यहां क्रिप्टो के जरिये साइबर अपराध, डिजिटल धोखाधड़ी सीएफटी और धनशोधन जैसी वारदातों को भी अंजाम दिया जा रहा है। क्रिप्टो करेंसी की बढ़ती लोकप्रियता ने गैरकानूनी चीजें खरीदने में इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया है।**

ठगी के लिए इस्तेमाल किए जा रहे यूआरएल को ब्लॉक करने की दिशा में भी सरकार काम कर रही है। अपने यहां क्रिप्टो के जरिये साइबर अपराध, डिजिटल धोखाधड़ी सीएफटी और धनशोधन जैसी वारदातों को भी अंजाम दिया जा रहा है। क्रिप्टो करेंसी की बढ़ती लोकप्रियता ने गैरकानूनी चीजें खरीदने में इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया है।

वैश्विक ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म चेन एनालिसिस के अनुसार, क्रिप्टो करेंसी के लेन-देन के मामले में अमेरिका के बाद ब्रिटेन, तुर्किये और रूस को पीछे छोड़ते हुए भारत दूसरा सबसे बड़ा बाजार बन गया है। भारत में क्रिप्टो करेंसी के कॉइनडीसीएक्स, कॉइनस्विच, वजीरएक्स, बाययूकॉइन, जेबपे, गियोटस, उनोकॉइन आदि एक्सचेंज अपना परिचालन कर रहे हैं। क्रिप्टो एक्सचेंज स्टॉक एक्सचेंज की तरह निवेशकों को डिजिटल मुद्राओं में खरीदने-बेचने में मदद करता है।

भारत में क्रिप्टो एक्सचेंज के परिचालन के लिए पंजीकरण कराना जरूरी है, लेकिन यहां सिर्फ 31 क्रिप्टो एक्सचेंजों ने ही फाइनेंशियल इंटेलिजेंस यूनिट (एफआईयू) के पास पंजीकरण कराया है। कई क्रिप्टो एक्सचेंज भारत में बिना पंजीकरण के गैर कानूनी तरीके से कारोबार कर रहे हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार, देश के 10 शहरों में क्रिप्टो करेंसी के लगभग 60 प्रतिशत निवेशक निवास करते हैं। देश क्रिप्टो में सर्वाधिक निवेश करने वाले पांच शहर क्रमश: दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, लखनऊ और पटना हैं। क्रिप्टो में निवेश करने वाले टियर 2 शहरों में पटना और लखनऊ अग्रणी हैं। इसमें महिलाएं भी पीछे नहीं हैं।

दुनिया भर में जिस रफ्तार से डिजिटलाइजेशन हो रहा है, उसमें क्रिप्टो करेंसी के प्रसार को रोका नहीं जा सकता है। हालांकि, वैश्विक स्तर पर भारत जैसे अनेक देश हैं, जहां क्रिप्टो करेंसी की संकल्पना से ज्यादातर लोग अनजान हैं। फिर भी, आने वाले दौर में इसकी स्वीकृति बढ़ने की उम्मीद है। बदले परिवेश में, दुनिया भर की सरकारें क्रिप्टो करेंसी को विनियमित करने के तरीकों की तलाश कर रही हैं, जिनमें से कुछ ने नए नियम और कानून भी बनाए हैं।

## संस्कार क्या है?

एक राजा के पास सुन्दर घोड़ी थी। कई बार युद्व में इस घोड़ी ने राजा के प्राण बचाये और घोड़ी राजा के लिए पूरी वफादार थी। कुछ दिनों के बाद इस घोड़ी ने एक बच्चे को जन्म दिया, बच्चा काना पैदा हुआ, पर शरीर हष्ट पुष्ट व सुडौल था।

बच्चा बड़ा हुआ, बच्चे ने माँ से पूछा- माँ मैं बहुत बलवान हूँ, पर काना हूँ, यह कैसे हो गया?

इस पर घोड़ी बोली-बेटा जब में गर्भवती थी, तू पेट में था तब राजा ने मेरे ऊपर सवारी करते समय मुझे एक कोड़ा मार दिया, जिसके कारण तू काना हो गया।

यह बात सुनकर बच्चे को राजा पर गुस्सा आया और माँ से बोला-माँ मैं इसका बदला लूंगा।

माँ ने कहा राजा ने हमारा पालन-पोषण किया है, तू जो स्वस्थ है, सुन्दर है, उसी के पोषण से तो है, यदि राजा को एक बार गुस्सा आ गया तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उसे क्षति पहुचाये, पर उस बच्चे के समझ में कुछ नहीं आया, उसने मन ही मन राजा से बदला लेने की सोच ली।

एक दिन यह मौका घोड़े को मिल गया राजा उसे युद्व पर ले गया। युद्व लड़ते-लड़ते राजा एक जगह घायल हो गया, घोड़ा उसे तुरन्त उठाकर वापस महल ले आया।

इस पर घोड़े को ताज्जुब हुआ और माँ से पूछा- माँ आज राजा से बदला लेने का अच्छा मौका था, पर युद्व के मैदान में बदला लेने का ख्याल ही नहीं आया और न ही ले पाया, मन ने गवारा नहीं किया।

इस पर घोडी हंस कर बोली- बेटा तेरे खून में और तेरे संस्कार में धोखा है ही नहीं, तू जानकर तो धोखा दे ही नहीं सकता है।

तुझ से नमक हरामी हो नहीं सकती, क्योंकि तेरी नस्ल में तेरी माँ का ही तो अंश है।

यह सत्य है कि जैसे हमारे संस्कार होते है, वैसा ही हमारे मन का व्यवहार होता है, हमारे पारिवारिक संस्कार अवचेतन मस्तिष्क में गहरे बैठ जाते हैं, माता-पिता जिस संस्कार के होते हैं, उनके बच्चे भी उसी संस्कारों को लेकर पैदा होते हैं।

हमारे कर्म ही संस्कार बनते हैं और संस्कार ही प्रारब्धों का लेते हैं! यदि हम कर्मों को सही व बेहतर दिशा दे दें तो संस्कार अच्छे बनेगें और संस्कार अच्छे बनेंगे तो जो प्रारब्ध का फल बनेगा, वह मीठा व स्वादिष्ट होगा।

# राम लला की प्राण प्रतिष्ठा से देश में होगा 50 हजार करोड़ रुपये का कारोबार

अयोध्या के राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारियां जोरों पर हैं। देश विदेश से अनेक लोगों को इस समारोह में शामिल होने का निमंत्रण मिला है। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) की राष्ट्रीय कोर कमेटी की तीन जनवरी को नागपुर में हुई बैठक में यह पता चला है कि अयोध्या में राम लला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से देश में 50 हजार करोड़ रुपये का कारोबार होगा। अभी से ही मार्केट में राम मंदिर से जुड़ी विभिन्न वस्तुओं की भारी डिमांड हो गई है। मूर्तियों और पूजा सामग्री की डिमांड बढ़ रही है। कैट के पदाधिकारियों के अनुसार, राम मंदिर के उद्घाटन ने देश में पूजा पाठ से संबंधित एक बड़े व्यापार के अवसर पैदा किए हैं।

कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीसी भरतिया एवं राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने बताया, राम मंदिर लोगों की आस्था के साथ ही देश में एक बड़े व्यापार का भी केंद्र बन रहा है। खासतौर पर छोटे निर्माता और लघु व्यवसाय करने वाले लोगों के लिए व्यापार के अनेक अवसर सामने आ रहे हैं। देश के विभिन्न शहरों में विशेषकर, घरों से छोटा-मोटा काम करने वाली महिलाओं एवं वंचितों को भी इस आयोजन से बड़ी मात्रा में रोजगार मिल रहा है। राम मंदिर, देश में आर्थिक संपन्नता का एक बड़ा संदेश देगा। राम मंदिर से देश में 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक के व्यापार के कैट के पूर्व आंकड़े से कहीं ज्यादा व्यापार होने जा रहा है। तीन जनवरी को नागपुर में हुई कैट की राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक में देश के विभिन्न राज्यों से अनेक व्यापारी नेताओं ने भाग लिया था। अयोध्या के राम मंदिर के उद्घाटन ने देश के विभिन्न प्रदेशों में पूजा पाठ से संबंधित एक बड़े व्यापार के अवसर पैदा किए हैं।

बतौर खंडेलवाल, पूजा के लिए विभिन्न आवश्यक वस्तुओं की बड़ी मांग देखने को मिल रही है। जैसे-जैसे 22 जनवरी नजदीक आ रही है, वैसे ही राम एवं पूजा पाठ से जुड़ी वस्तुओं की मांग में भी तेजी आ रही है। इस मांग को देखते हुए बहुत से लोगों ने अपने पारंपरिक व्यवसाय के साथ ही ऐसी अनेक वस्तुओं का उत्पादन या व्यापार शुरू कर दिया है, जो राम मंदिर के महोत्सव से जुड़ी हैं। राम मंदिर के प्रतीक के रूप में मंदिर का मॉडल हर कोई अपने घर में रखना चाहता है। यह मॉडल बाजार में 4 इंच, 6 इंच, 8 इंच एवं 12 इंच में उपलब्ध हैं। इससे बड़े साइज के मॉडल भी बाजार में मिल रहे हैं। मुख्य रूप से यह मॉडल पाइनवुड, लकड़ी, हार्डबोर्ड आदि में बनाए जा रहे हैं। श्रीराम, राम मंदिर एवं राम दरबार के चित्र व अन्य देवी-देवताओं के चित्र एवं मूर्तियों की बड़ी मांग आ रही है। ये मूर्तियां, मिट्टी, पाइनवुड, लकड़ी, पीतल, तांबा एवं अन्य अनेक प्रकार के रॉ मैटेरियल से बनाई जा रही हैं। पूजा के लिए बड़ी मात्रा में मिट्टी, पीतल एवं अन्य धातुओं के एकल दीपक एवं एक ही दीपक में अनेक दीपक आरती के लिए, अगरबत्ती, धूपबत्ती स्टैंड सहित अन्य अनेक वस्तुएं भी बड़ी मात्रा में बाजार में हैं। ये ग्राहकों की बड़ी पसंद बनी हैं।

# उम्र और जीवन जीने का कोई रिश्ता नहीं, बेकार है आंकड़ों में पड़ना

**एमिली लेबर वॉरेन**

*समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।*
*विनश्यत्स्वविनश्यन्तं य: पश्यति स पश्यति।।*
*अर्थात् जो पुरुष नष्ट होते हुए सब चराचर भूतों में परमेश्वर को नाशरहित और समभाव से स्थित देखता है वही यथार्थ देखता है।*
*भीष्म पर्व, गीता 13/28*
*(अर्जुन के प्रति साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण का गीतोपदेश)*

हम सभी की उम्र का एक आंकड़ा होता है, जिसे हम अपने हर जन्मदिन पर याद करते हैं। लेकिन कुछ 50, 60 या 70 साल के लोग अपेक्षाकृत ज्यादा युवा दिखते और खुद महसूस भी करते हैं, जबकि इसी आयु-वर्ग के कुछ दूसरे लोग बढ़ती उम्र का रोना रोते रहते हैं। कुछ बायोमार्कर होते हैं, जैसे, त्वचा की सेहत, रक्तचाप, फेफड़ों की क्षमता इत्यादि जिनके आधार पर वैज्ञानिक इस फर्क को माप सकते हैं। स्वस्थ जीवनशैली और भाग्यशाली आनुवंशिक विरासत वाले लोग इन आकलनों में युवा पाए जाते हैं। लेकिन लोगों की बायोलॉजिकल उम्र जानने का एक तरीका सब्जेक्टिव उम्र पर आधारित भी होता है।

फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एंटोनियो टेरासियानो के अनुसार, जब वैज्ञानिक पूछते हैं, %आप दिन के ज्यादातर वक्त खुद को कितनी उम्र का महसूस करते हैं?, तब लोग इस सवाल का जो जवाब देते हैं, वह उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को दर्शाता है।% जो लोग खुद को अपनी उम्र से कम का महसूस करते हैं, वे अमूमन उन लोगों की तुलना में ज्यादा स्वस्थ होते हैं, जो खुद को ज्यादा उम्र का महसूस करते हैं। 2018 में दक्षिण कोरिया में हुए एक अनुसंधान में 68 स्वस्थ बुजुर्गों के दिमाग की जांच की गई, जिसमें पाया गया कि जो लोग खुद को युवा महसूस करते हैं, उनमें वृद्धावस्था के लक्षण कम ही दिखे। सवाल उठता है कि क्या युवा महसूस करना लोगों को स्वस्थ बनाता है, या फिर जो लोग पहले से स्वस्थ हैं, वे युवा महसूस करते हैं।

एजिंग एंड मेंटल हेल्थ जर्नल में प्रकाशित एक चीनी अध्ययन में पाया गया कि लोगों ने याददाश्त संबंधी कार्य में बेहतर प्रदर्शन किया, जब उन्हें बताया गया कि वे अपनी उम्र के अन्य लोगों की तुलना में अधिक तेज हैं। लीपजिग यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर वीज़ के अनुसार जिन संस्कृतियों में बुढ़ापे को नकारात्मक नहीं समझा जाता, वहां के लिए सब्जेक्टिव उम्र के विचार से वाकिफ नहीं होते। उनके एक शोध के दौरान बुजुर्ग व्यक्ति ने जवाब दिया, %मैं 80 साल का हूं, लेकिन आपका क्या मतलब है कि मैं खुद को कितनी उम्र का महसूस करता हूं?

वर्जीनिया कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी की डॉ ट्रेसी गेंड्रोन के अनुसार %जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, हम अधिक खुश और संतुष्ट होने लगते हैं। सब्जेक्टिव उम्र के विचार के मुताबिक एक साठ साल का व्यक्ति खुद को 45 साल का महसूस कर सकता है। लोग लगातार परिपक्व होते हैं और कोई व्यक्ति जो 45 साल में होता है, वह 60 साल में नहीं हो सकता। यह सवाल दरअसल अनैतिक है। उम्र बढ़ना कोई नकारात्मक चीज नहीं। जो लोग जिंदगी का आनंद उठाना जानते हैं, वे हर उम्र में शांति से रह सकते हैं। और जो जिंदगी जीना नहीं जानते, वे बेशक 70 के हों और 40 का महसूस करते हों, संतुष्ट फिर भी नहीं हो सकते।

# हिट एंड रन कानून हड़ताल खत्म हुई है, समस्या नहीं

मौजूदा सरकार ने सिर्फ शहरों, इमारतों और रेलवे स्टेशनों के ही नाम नहीं बदले हैं बल्कि कानूनों के भी नाम कुछ मसौदे के साथ बदले हैं. इन में से आईपीसी का नाम अब बीएनएस यानी भारतीय न्याय संहिता 2023 कर दिया है. हिट एंड रन कोई नई समस्या या जुर्म नहीं है जिस में आमतौर पर भारी वाहन, मसलन बस और ट्रक ड्राइवर किसी को भी कुचल कर भाग जाते हैं.

पीड़ित को इलाज की सहूलियत भी नहीं मिलती. बीएनएस में सरकार ने सख्ती बरतते बदलाव ये किए हैं कि यदि गलत ड्राइविंग या फिर लापरवाही के चलते किसी व्यक्ति की मौत हो जाती है तो फिर वाहनचालक को अधिकतम 10 साल की सजा और 7 लाख रुपए तक के जुर्माने से दंडित किया जाएगा. सैक्शन 104 ए और बी में इस के जिक्र में साफ लिखा है कि यदि कोई हादसा होता है और गाड़ी से टक्कर के बाद ड्राइवर खुद मौके से या वाहन सहित भाग निकलता है तो उसे 10 साल की सजा होगी.

आसान शब्दों में कहें तो हादसे के बाद ड्राइवर घटना की जानकारी पुलिस अधिकारी या फिर मजिस्ट्रेट को नहीं देता है तो उसे 10 साल तक की सजा हो सकती है और जुर्माना भी देना होगा. अभी तक यह सजा आईपीसी की धाराओं के तहत दी जाती थी. इस की धारा 279 लापरवाही से वाहन चलाने की है, इस में 2 साल की सजा का प्रावधान है.

धारा 304 ए ड्राइवर की पहचान के बाद लागू होती है और मामला धारा 338 (जान जोखिम में डालना) के तहत दर्ज होता है. 304 ए गैरइरादतन हत्या वाली धारा है जिस में सजा ए मौत का भी प्रावधान है लेकिन हिट एंड रन के मामलों में जुर्म आमतौर पर साबित नहीं हो पाता.

हिट एंड रन के मामलों में सब से बड़ी दिक्कत यह है कि अपराधी के खिलाफ किसी भी प्रत्यक्ष सुबूत का अभाव होता है. ऐसे में पुलिस हवा में हाथपैर मारती रह जाती है और अधिकतर मामलों में दोषी पकड़ा ही नहीं जाता और जिन में पकड़ में आ जाता है उन में 2 साल की सजा भुगत कर बाहर आ जाता है.

चिंता की बात हिट एंड रन के बढ़ते मामले हैं. साल 2022 में हिट एंड रन की 67,387 वारदातें हुईं जिन में 30,486 लोगों की मौतें हुईं. इन में से कितने दोषी पकड़े गए और कितनों को सजा हुई, यह आंकड़ा अभी किसी एजेंसी ने जारी नहीं किया है. 2021 में हिट एंड रन की 57,415 वारदातें हुईं थीं जिन में 25,938 लोगों की जानें गई थीं. 2020 में ऐसे 52,448 मामले दर्ज हुए थे जिन में 23,159 मौतें हुई थीं.

### ड्राइवरों की दलील

नए कानून और उस के प्रावधानों पर ड्राइवरों का डर यह है कि यदि वे हादसे में घायल व्यक्ति की मदद करते हैं तो उन्हें भीड़ के गुस्से का शिकार होना पड़ेगा जिस में उन की भी जान जा सकती है. अलावा इस के, सजा और जुर्माना राशि दोनों ज्यादा हैं. भारत में किसी ड्राइवर के पास 7 या 10 लाख रुपए जमा नहीं हो सकते क्योंकि वे 8 से 25 हजार रुपए की पगार पर नौकरी करते हैं, इसी में से उन्हें घर चलाना और पालना होता है.

अब यहां एक तर्क यह बनता है कि मरने वाले का भी तो घर था, उसे कौन चलाएगा और पालेगा. इस सवाल का जबाब खोजती दुलाल गुहा निर्देशित फिल्म 'दुश्मन' साल 1971 में बनी थी जिस में राजेश खन्ना और मीना कुमारी प्रमुख भूमिकाओं में थे. ट्रक ड्राइवर बने राजेश खन्ना के ट्रक से टकरा कर मीना कुमारी के पति की मौत हो जाती है तो यही सवाल जज बने रहमान के सामने आ खड़ा होता है.

एक नया प्रयोग करते अदालत राजेश खन्ना को बतौर सजा मीना कुमारी के खेतों में खेती कर उस के परिवार का भरणपोषण करने की सुनाती है. शुरू में मृतक के घर वाले हीरो को दुश्मन कहते और समझते उसे दुत्कारते हैं लेकिन फिर धीरेधीरे वह गांव वालों का दिल जीत लेता है और गांव की ही एक लड़की से शादी कर वहीं बस जाता है और मृतक के घर का हिस्सा बन जाता है. नायिका की भूमिका मुमताज ने निभाई थी. यह हिट फिल्म प्रयोगवादी थी जिसे 70 के दशक के दर्शकों ने हाथोंहाथ लिया था.

ऐसा होना हकीकत में भी नामुमकिन नहीं है लेकिन सरकार का इरादा किसी प्रयोग का न हो कर सीधे सजा देने का है जिस से ड्राइवरों के दिल दहले हुए हैं. नए कानून में खोट कहांकहां है, यह गिनाते आल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस के अध्यक्ष अमृतलाल मदान कहते हैं कि संशोधनों के पहले जिम्मेदार लोगों से सुझाव नहीं लिए गए. इस के अलावा देश में ऐक्सिडैंट इन्वैस्टिगेशन प्रोटोकौल का अभाव है. पुलिस वैज्ञानिक जांच किए बिना ही दोष बड़े वाहन पर मढ़ देती है.

उलट इस के, गृहमंत्री अमित शाह की संसद में दी गई यह दलील सुनने में दमदार लेकिन एकतरफा थी कि उन लोगों के लिए सख्त सजा का प्रावधान है जो सड़क दुर्घटना के बाद मौके से भाग जाते हैं और पीड़ितों को मरने के लिए छोड़ देते हैं. गृहमंत्री का तब यह कहा कानून में कहीं नहीं दिख रहा कि उन लोगों के लिए कुछ उदारता दिखाई जाएगी जो खुद से पुलिस को सूचित करेंगे और घायलों को अस्पताल ले जाएंगे.

### समझौते की छाछ

ड्राइवरों की हड़ताल का आम लोगों ने विरोध नहीं किया क्योंकि नए प्रावधान निजी वाहनों पर भी लागू होते हैं जिस से आम लोग भी सहमे हुए हैं. हड़ताल वापस लेने का समझौता बड़े ही ड्रामाई तरीके से अमृतलाल मदान और केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला के बीच हुआ जिस का खुलासा करते अमृतलाल मदान ने विजयी मुद्रा में कहा कि सरकार और ट्रांसपोर्टर्स के बीच सहमति बन गई है. अभी नए कानून के प्रावधान लागू नहीं हुए हैं. गृहमंत्री अमित शाह ने 10 साल की सजा और जुर्माने को रोक दिया है. ट्रांसपोर्ट कांग्रेस की अगली बैठक होने से पहले यह कानून लागू नहीं होगा.

अव्वल तो कोई उस वक्त तक इस बात पर भरोसा नहीं कर सकता जब तक ये बातें संसद में न कही जाएं क्योंकि कृषि कानूनों के विरोध के दौर में भी ऐसी बातें सामने आई थीं कि सरकार मान रही है या विचार कर रही है या फिर झुक रही है.

हालफिलहाल तो हड़ताली 90 लाख ड्राइवर मान गए हैं, आगे क्या होता है, यह देखना दिलचस्प होगा क्योंकि यह सरकार बहुत अड़ियल और जिद्दी है जिस के अफसर ड्राइवरों को उन की औकात याद दिलाते हैं.

### पर इन का क्या होगा

चूंकि उदारता नए प्रावधानों में कहीं नहीं है और है भी तो नाम मात्र की. जमानत का प्रावधान भी इस में नहीं है. इसलिए भी ड्राइवर अड़ गए. उन का डर अपनी जगह वाजिब और जायज है कि भीड़ उन्हें छोड़ेगी नहीं और पुलिस वालों का बरताव भी पुलिसिया ही होगा तो हम क्यों हवन करते हाथ जलाएं. रही बात हिट एंड रन की, तो कोई भी जानबूझ कर एक्सिडैंट नहीं करता. यानी, कोई गलती महसूसते उसे सुधारने की गरज से पीड़ित को अस्पताल ले जाने की बात सोचे भी तो भीड़ और पुलिस का डर उसे ऐसा करने से रोकने वाला साबित होता है.

समस्याएं कई हैं. मसलन, सड़कों पर बेजा कब्जे जो कच्चीपक्की दुकानों और गुमठियों की शक्ल में हर शहर के बाहर कई किलोमीटर तक दिखते हैं, ये भी हादसों की बड़ी वजह बनते हैं लेकिन इन का जिक्र कहीं किसी कानून या संहिता में नहीं है. समस्या वे दुपहिया चालक भी हैं जो तेज रफ़्तार से फिल्मी हीरो की तरह वाहन दौड़ाते हैं और अकसर खुद बड़े या भारी वाहन की चपेट में आ जाते हैं.

इन से भी बड़ी समस्या शराब की उपलब्धता है. हाईवे पर शराब के ठेके इफरात से मिल जाते हैं. वहां के ढाबों और बड़े रैस्टोरैंट्स और होटलों में जायजनाजायज शराब पानी की तरह बिकती है. इन पर रोक तय है हादसों में कमी लाने वाली साबित होगी लेकिन जब हादसों का जिम्मेदार खासतौर से बड़े वाहन ड्राइवरों को मान ही लिया गया है तो इन छोटीमोटी मगर अहम बातों पर गौर और फ़िक्र करने की फुरसत किसे है. भोपाल से विदिशा की दूरी महज 45 किलोमीटर है, इस बीच सड़क से ही 8 दुकानें शराब की दिखती हैं जो हादसों को नयोता ही देती हैं.

हाईवे और एक्सप्रैसवे तो ठीक हैं लेकिन बाकी सड़कों की दुर्दशा, मसलन गड्ढे वगैरह भी बड़े हादसों की वजह बनते हैं. इन पर सरकार और कानून खामोश ही रहते हैं क्योंकि दोष देने को वाहनचालक जो हैं. सड़क दुर्घटना कि किसी इन्वैस्टिगेशन में शायद ही कभी सड़क की बदहाली को जिम्मेदार मानते संबंधित विभाग के अधिकारियों को तलब किया गया होगा.

## सड़क हादसों के लिए कठोर कानून तो चाहिए ही, लेकिन यह भी समझे सरकार

हाईवे जाम करके आपूर्ति रोकना अचानक फ्लैश मॉब की तरह नहीं हुआ। अखिल भारतीय मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (AIMTC) ने दिसंबर के अंत में भारत की नई दंड संहिता बीएनएस में हिट–एंड–रन एक्सिडेंट्स के लिए अधिकतम 10 साल की जेल और '7 लाख के जुर्माने' की समीक्षा का अनुरोध किया था। दूसरी तरफ, उसने ट्रक चालकों से भी धैर्य रखने की अपील की थी। लेकिन ट्रक ड्राइवरों ने इस अपील को बिल्कुल भाव नहीं दिया और हड़ताल शुरू कर दी। मंगलवार को सरकार के साथ बातचीत के बाद हड़ताल वापस ले ली गई। केंद्र सरकार ने आश्वासन दिया कि नए कानून लागू होने से पहले हितधारकों के साथ परामर्श किया जाएगा।

**ट्रक चालकों की दलील**–प्रमुख निकाय और ट्रक चालकों को डर था कि हिट–एंड–रन मामलों में विशेष रूप से हाईवे प पुलिस शायद ही कभी जांच करती है, बस ट्रक चालकों को ही दोषी मानती है। ऐसे मामलों की जांच कैसे की जाए, इस पर कोई मानक प्रक्रिया (एसओपी) नहीं है। दुर्घटना के बाद ट्रक चालक अगर मौके पर रुके तो आग–बबूला हुए स्थानीय लोग उसके साथ क्या करेंगे, इसका कुछ अंदाजा नहीं रहता है। इस खौफ से ट्रक ड्राइवर एक्सिडेंट को रिपोर्ट करवाने के लिए मौके पर रुकने की बजाय किसी तरह जान बचाकर निकलने को प्राथमिकता देते हैं। इस पर सरकार ने कहा कि कानून में कहीं नहीं लिखा है कि दुर्घटना की सूचना साइट से ही देनी चाहिए। एसोसिएशन का मानना है कि एक तो ट्रांसपोर्टेशन सेक्टर में ड्राइवरों की 27% कमी है, ऊपर से 10 साल की जेल की सजा का प्रावधान लोगों के इस सेक्टर से जुड़ने से रोकेगा। बहरहाल, ट्रक ड्राइवरों की हड़ताल से देश के सप्लाई चेन की जीवन रेखा बाधित हो गई। उम्मीद है आज से पेट्रोल–डीजल समेत अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति फिर से शुरू हो जाएगी।

**लेकिन क्या कानून को दोष देना चाहिए**– ट्रक चालकों की दलीलों में दम तो है, लेकिन कानून को दोष देना उनकी परेशानियों का समाधान नहीं है। एक सख्त कानून की जरूरत है। सड़क दुर्घटनाओं में भारत दुनिया में सबसे आगे है। वर्ष 2022 में हिट एंड रन मामलों में लगभग 59 हजार लोग मारे गए, जो सड़क हादसों में कुल मौतों का लगभग 30% है। महाराष्ट्र में 2022 में हर घंटे एक व्यक्ति की हाइवे एक्सिटेंड में मृत्यु हुई, जो 2021 की तुलना में 14त्न अधिक है। इसमें कोई शक नहीं कि लापरवाही से गाड़ी चलाने वाले ड्राइवरों की देश में कोई कमी नहीं है, जिनको नियम–कानूनों की कोई परवाह नहीं होती है।

**असली समस्या के समाधान की जरूरत**– ट्रक चालकों को झूठे मुकदमे का डर है। पूरे देश में पुलिसिंग क्वॉलिटी वास्तव में खराब हो गई है। इसके अलावा, कई गंभीर कारक दुर्घटना का कारण बनते हैं। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने 2020 में टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए एक साक्षात्कार में इसी सटीक पहचान की। उन्होंने कहा, 'दुर्घटनाओं और सड़क हादसों के मुख्य कारण खराब रोड इंजीनियरिंग, गलत विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर), चौक–चौराहों की गलत डिजाइनिंग, संकेतों और रोड चिह्नों का अभाव आदि हैं।' यही तो असल मुद्दा है। इसलिए, केवल कठोर दंड से ही सड़कों को सुरक्षित बनाने का मकसद सही नहीं है। सड़कों और राजमार्गों को ठीक कर दिया जाए तो कानून को नरम करने की ट्रक चालकों की मांग का बहुत कम महत्व रह जाता है। तब सरकार भी ड्राइवरों पर दबाव बना सकती है।

## एआई के लिए बने अलग मंत्रालय

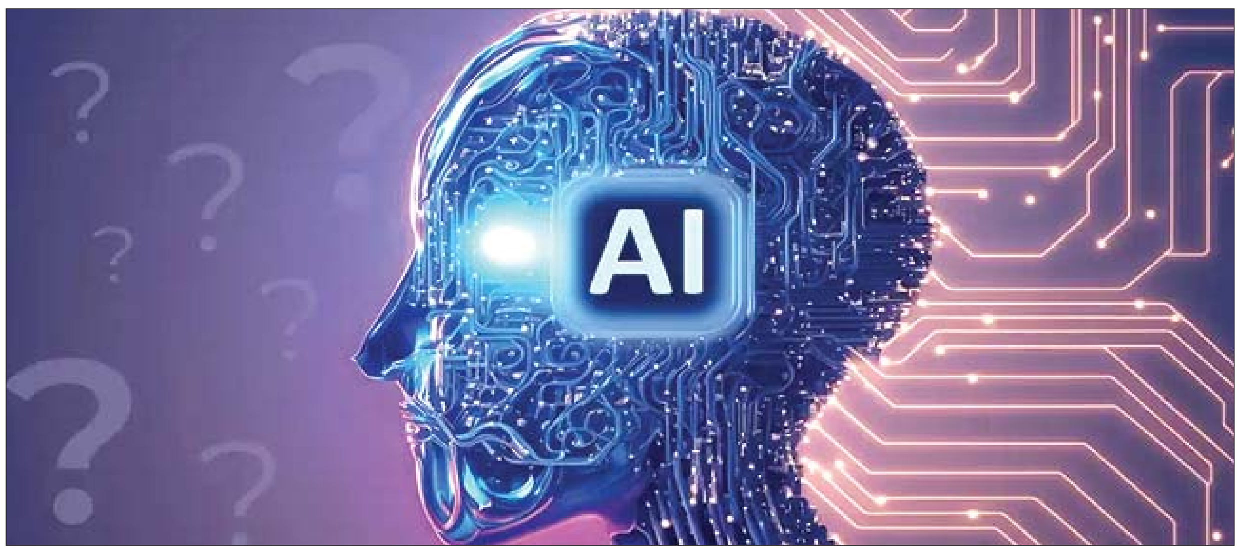


आजकल दुनिया भर में आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (AI) से बनती उम्मीदों और आशंकाओं का ग्राफ जिस तेजी से चढ़ता जा रहा है, उससे साफ है कि अपने देश में भी इसके लिए अलग से एक मंत्रालय गठित करने का वक्त आ गया है। इसके अलग–अलग पहलुओं की पड़ताल करते हुए इस जरूरत की अहमियत को बेहतर ढंग से महसूस किया जा सकता है।

### सही तालमेल जरूरी

आम लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी में ढ्ढ का बढ़ता दखल इस बात का सबूत है कि लोग इससे अच्छे–बुरे ढंग से प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे में AI को जिम्मेदार बनाने की जरूरत है। ध्यान रखने की बात यह है कि इस दिशा में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के प्रयास आम लोगों की आकांक्षाओं और आशंकाओं के अनुरूप होने चाहिए। एक स्वतंत्र और समर्पित मंत्रालय नए बनते कानूनों की कमियां दूर करते हुए इस प्रक्रिया को आसान बना सकता है।

### सामरिक इस्तेमाल

एक अहम पहलू सामरिक क्षेत्रों में AI के इस्तेमाल का है। दूसरे देशों या नॉन स्टेट ऐक्टरों की अवांछित गतिविधियों से बचाव का काम सरकार के ही निर्देशन में चल सकता है। अलग मंत्रालय से न केवल इस कार्य को ज्यादा तवज्जो मिल सकेगी बल्कि इससे टेक्नॉलजी के विकास के अनुकूल माहौल बनाने में भी मदद मिलेगी। इसी से भविष्य में जेनरेटिव AI से भी ज्यादा ताकतवर तकनीक की संभावनाएं भी मजबूत होंगी।

### नाजुक मसला

तकनीक के नए चरण का विकास कितना नाजुक मसला है, यह UAE के AI मामलों के मंत्री उमर अल ओलामा की बातों से साफ होता है। वह बताते हैं कि कैसे टेक्नॉलजी से डर और प्रिंटिंग प्रेस के ओवर रेग्युलेशन ने पश्चिम एशिया को करीब 200 वर्षों तक इस फील्ड में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से दूर रखा।

### दुरुपयोग पर रोक

यह बात भी है कि AI का गैर–जिम्मेदाराना इस्तेमाल कई तरह के खतरों को जन्म दे रहा है, जो आखिरकार AI की ग्रोथ की रफ्तार को भी प्रभावित करेगा। ध्यान रहे, टेक्नॉलजी डिवेलपर्स हों या उनके क्लाइंट्स, इन दोनों का आचरण नैतिक बना रहे यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी सरकार की ही होती है।

### नीति आयोग का जिम्मा

अभी AI को लेकर सरकार के रेस्पॉन्स की अगुआई नीति आयोग कर रहा है। चाहे नई टेक्नॉलजी को टेस्ट करने की बात हो या उसके लिए अनुकूल इकोसिस्टम बनाने की, दोनों काम उसी के जिम्मे हैं। लेकिन ये दोनों काम बेहतर ढंग से अंजाम दिए जा सकते हैं अगर एक स्वतंत्र मंत्रालय के सुपुर्द कर दिए जाएं, जहां न केवल एक निश्चित बजट होगा बल्कि ज्यादा लोग भी जुड़े होंगे।

समझना होगा कि भारत जैसी बड़ी इकॉनमी वाले देश में AI के लिए एक निर्धारित रास्ता सुनिश्चित करने की जरूरत है और इस काम को अंजाम देने की।

## विरोधियों में वफादारी ढूंढेगी भाजपा की नई समिति, पार्टी बदलने वालों को पार करना होगा ये फिल्टर

लोकसभा चुनाव 2024 से पहले भाजपा ने एक नई समिति गठित की है। यह ऐसे नेताओं की क्वालिटी चेक करेगी जो दूसरे दल के हैं और भाजपा में शामिल होना चाहते हैं।

दरअसल, चुनाव के समय बहुत से नेता पार्टी बदलते हैं। कई बार स्थिति यह होती है कि दूसरी पार्टी छोड़कर आने वाले नेता नई पार्टी के प्रति भी वफादारी नहीं दिखाते। टिकट नहीं मिलने या मुश्किल वक्त आने पर वे साथ छोड़ जाते हैं। लोकसभा चुनाव से पहले दूसरे दलों के कई नेता भाजपा में शामिल होना चाहते हैं। भाजपा दूसरी पार्टी से ऐसे नेता को अपनी पार्टी में नहीं लाना चाहती जो आगे चलकर दगा दे जाएं।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इसके चलते भाजपा ने दूसरी पार्टी छोड़कर आने की चाह रहने वाले नेताओं की क्वालिटी चेक करने के लिए एक नया फिल्टर जोड़ दिया है। पार्टी ने नई समिति बनाई है। इस समिति का काम भाजपा में शामिल होने की इच्छा रखने वाले नेता की जांच करना है। समिति की रिपोर्ट पर पार्टी तय करेगी कि संबंधित नेता को सदस्यता देनी है या नहीं।

### दूसरे दलों के नेताओं को पार करना होगा नया फिल्टर

भाजपा में शामिल होने के लिए दूसरे दलों के नेताओं को इस नए फिल्टर को पार करना होगा। समिति की पहली बैठक 6 जनवरी को होगी। यह समिति हरी झंडी दिखाएगी तभी विपक्ष के किसी नेता को भाजपा में शामिल किया जाएगा। भाजपा का कहना है कि नई समिति बनाने के पीछे सोच यह है कि ऐसे नेता जो आगे चलकर वफादार नहीं रहें उन्हें पार्टी में शामिल करने के खतरे को कम किया जाए। ऐसे नेता को पार्टी में शामिल नहीं किया जाए जो चुनाव के बाद या कठिन वक्त आने पर साथ छोड़ दें।

## ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी

Dr.Manju Singh
Breast oncoplastic surgeon
Professor and HOD - PT. J.N.M. MEDICAL COLLEGE, RAIPUR

कुछ महिलाओं मे स्तनों के अनियमित आकार को लेकर शिकायते रहती है तो कुछ महिलाये सुंदरता और कॉन्फिडेंस बढ़ाने के लिए अपने स्तनों को फिर से सही आकार देना चाहती हैं, बड़े स्तन जो गर्दन में दर्द, पीठ दर्द आदि का कारण बनते हैं। इसे रिडक्शन मैमप्लास्टी प्रक्रिया के रूप में भी जाना जाता है।ब्रेस्ट काज़्मेटिक सर्जरी इन महिलाओ के साथ साथ गाइनेकोमास्टिया (जहां पुरुषों के पुरुष स्तन सौंदर्य की दृष्टि से बड़े होते हैं) से पीड़ित पुरुषों मे भी संतोषजनक परिणाम देकर दैनिक शारीरिक गतिविधियों को बेहतर बनाने में मदद करता है।

जिन महिलाओं को निम्न शिकायतें होती हैं उनमें ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी की जाती है।

भारी स्तनों के कारण पीठ या गर्दन, कंधे में गंभीर, पुराना दर्द। इसके लिए नियमित दर्द निवारक दवाओं की आवश्यकता होती है, जो लंबे समय में किसी व्यक्ति के लिए अच्छा नहीं होता है।

बड़े आकार के स्तनों के कारण, यदि महिलाओं को पुराने चकत्ते या त्वचा में जलन हो रही है, तो उन्हें स्तन कम करने की सर्जरी करानी चाहिए।

स्तनों में पुरानी नसों का दर्द।

बड़े आकार के स्तनों के कारण शारीरिक गतिविधियां सीमित हो सकती हैं।

बड़े स्तनों के कारण खराब आत्म छवि या जटिल दिखना।

सही साइज़ की ब्रा, शर्ट या अन्य वस्त्र प्राप्त करने में कठिनाई।

यह उन पुरुषों के लिए भी किया जा सकता है, जिनके बड़े आकार के पुरुष स्तन हैं और वे अपनी शारीरिक बनावट में सुधार करना चाहते हैं।

इन लोगों को ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी से बचना चाहिए।

भारी धूम्रपान करने वालों (सर्जरी के परिणाम संतोषजनक नहीं होंगे और वसूली लंबी हो जाएगी)

मधुमेह और अन्य हृदय समस्याओं वाले रोगी, या हृदय शल्य चिकित्सा के इतिहास वाले रोगी, वे रोगी जो पुरानी बीमारी के लिए दीर्घकालिक दवाएं ले रहे हैं।

जो लोग अपने स्तनों पर निशान नहीं चाहते हैं।

जो महिलाएं जल्द ही गर्भवती होने की योजना बना रही हैं, उन्हें ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी को स्थगित कर देना चाहिए क्योंकि सर्जरी के बाद स्तनपान मुश्किल है।

# दांत खाने की ही नही दिखाने के भी

**डॉ. सुजीत परिहार**
बीडीएस, एमआईडीए
मो.नं. 7000414949

सुन्दर दांतों की चाहत सभी को होती है लेकिन कुछ लोगो के दांत टेढ़े मेढ़े होते है,दांतों का अलाइनमेंट सही नहीं होता है। दांतों के बीच में काफी खुली हुई जगह होती है। इस तरह की स्थितियों अक्सर लोगों की निगाह जमी रहती है. लोगों को ब्रश करने,भोजन करने और ठीक से चबाने में तकलीफ देता है। जिसकी वजह से उन्हें कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोग यदि अपने दांतों की उचित देखभाल नहीं करते तो सामन्य लोगो की तुलना में इन लोगो के दांतों की सडन की समस्या का खतरा ज्यादा होता है। प्रसिद्ध दंतरोग विशेषग्य सर्जन डॉ सुजीत परिहार ने लाईफ वर्सिटी से बात करते हुए बताया की अक्सर बचपन के दूध वाले दांत सही आते है लेकिन परमानेंट निकलने वाले दांत टेढ़े मेढ़े हो जाते है। जिसका प्रमुख कारण इनका ठीक से देखभाल न करना हो सकता है। हालाँकि कुछ कारण अनुवाशिक भी होते है। डॉ सुजीत बताते हैं कि टेढ़े मेढ़े दांत बैक्टेरिया के बढ़ने को अवसर प्रदान करते है जिससे प्लांक निर्मित होता है और साँसों से दुर्गन्ध आती है, मसूढ़ों की दांतों पर पकड कमजोर हो जाती है। टेढ़े मेढ़े दांतों के मध्य अक्सर दरार रहता है फलत: खाते और चबाते समय दांत आपस में रगड़ खाकर कमजोर पड जाते है। टेढ़े दांतों की समस्या किसी को भी हो सकती है। मुख्य रूप से अगर दूध के दांत गिरने के बाद स्थायी दांत आसान तरीके से निकलते हैं। उपचार के लिए कोई विशेष आयु बाधा नहीं है। टेढ़े-मेढ़े दांतों का इलाज 2-3 तरीकों से हो सकता है. सबसे अच्छा और सुरक्षित तरीका है दांतों पर तार लगवाना. जिसको ब्रेसेस बोलते हैं। ब्रेसेस टेढ़े मेढ़े दांतों को ठीक कर मुख की सुन्दरता बढाने में मदद करते है तार 2-3 तरह से लगते हैं। ये मेटल ब्रेसेस, सेरामिक ब्रेसेस, इनविजिलाइन अलाइनर्स. बच्चों को ब्रेसेस लगवाने की सबसे सही उम्र 12-14 साल होती है। तब दूध के दांत सारे टूट जाते हैं और पक्के दांत सारे आ जाते हैं। इस समय हड्डियों में भी लचीलापन होता है. इस समय दांत बहुत जल्दी ठीक हो सकते हैं। 40 साल की उम्र तक दांतों का टेढ़ापन ठीक किया जा सकता है. अलाइनर्स बड़े लोगों के लिए एक अच्छा इलाज है। अलाइनर्स ज़्यादा दिखाई नहीं देते।

# स्किन के पहरेदार

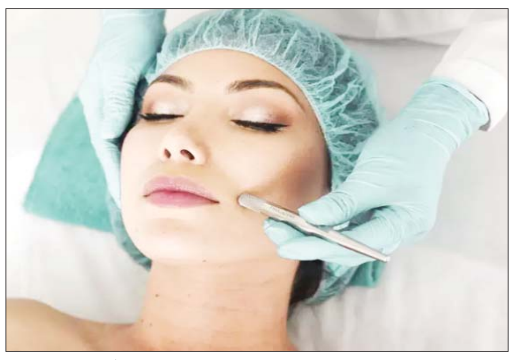

युवा और आकर्षक दिखने की चाहत प्रत्येक व्यक्ति में होती है।त्वचा को कई रोगों से बचाये रखने एवँ त्वचा को चुस्तदुरुस्त बनाये रखने में डर्मेटोलजिस्ट की महती भूमिका होती है।स्किन इंसान के शरीर का सबसे वृहद हिस्सा हिता है । डर्मेटोलॉजिस्ट सिर्फ मुहासों और निशानों का ही ईलाज नही करते बल्कि स्किन को सुंदर बनाने के कई ट्रीटमेंट भी करते है

हर कोई बेदाग और निखरी त्वचा पाने की कोशिश में रहता है। खासकर महिलाएं अपने फेस को लेकर काफी सजग रहती हैं। दाग-धब्बे, झुर्रियां देख वो वह परेशान हो जाती हैं। और इससे निजात पाने के लिए वो कई चीजें इस्तेमाल करती हैं, लेकिन इससे उन्हें कोई खास फर्क देखने को नहीं मिलता है। यही वजह है कि वो आज कल ब्यूटी ट्रीटमेंट में ज्यादा दिलचस्पी ले रही हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि इसके इस्तेमाल से चेहरे पर तुरंत ग्लो देखने को मिलता है। इन दिनों केमिकल पील काफी ट्रेंड में है, इस ब्यूटी ट्रीटमेंट में चेहरे पर ना सिर्फ इंस्टेंट ग्लो देखने को मिलता है बल्कि इससे कई सारी स्किन प्रॉब्लम्स भी ठीक हो जाती हैं। हालांकि, इसे करवाने से पहले एक्सपर्ट से पूरी जानकारी जरूर लेनी चाहिए। दरअसल, केमिकल पील ट्रीटमेंट कई तरह के होते हैं।

एक्सपर्ट आपकी स्किन को देखने के बाद बताते हैं कि आपके लिए क्या बेस्ट है और क्या नहीं।

**डॉ. अजित कुमार**
**MBBS, MD (SKin & VD) BHU**
**Sparsh Skin & Dental Clinic**

# सब राष्ट्रीय जूनियर तीरंदाजी प्रतियोगिता का समापन

40 सब जूनियर राष्टीय तीरंदाजी प्रतियोगिता का इंडियन वर्ग में समापन समारोह में उपस्थित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बृजमोहन अग्रवाल जी स्कूल शिक्षा मंत्री और साथ में महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी रजवाड़ी एवं सूरजपुर के बीजेपी के जिला अध्यक्ष बाबूलाल जी अग्रवाल विशेष अतिथि के रूप में जेपी बालाजी ग्रुप और सीताराम जी अग्रवाल साथ में सुभाष तिवारी जी स्विमिंग के अध्यक्ष गोपाल खंडेलवाल और भारतीय तीरंदाजी संघ के उपाध्यक्ष मध्य प्रदेश के अध्यक्ष श्री विद्यार्थी जी इन सब के उपस्थिति में इंडियन वर्क के विजय तीरंदाज को पुरस्कार वितरण किया गया साथ ही भारतीय तीरंदाजी संघ से आए टेक्निकल स्टाफ कभी अभिनंदन किया गया इस अवसर पर मुख्य अतिथि बृजमोहन अग्रवाल जी ने कहा कि तीरंदाजी तकनीकी एवं दिमागी कसरत का खेल है और आयोजकों ने एक दिन नहीं 2 दिन नहीं 3 दिन नहीं पूरे 12 दिन तक टूर्नामेंट का आयोजन कर छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में तीरंदाजी का एक माहौल बनाएं और कहां की आने वाले समय में खेलों को बढ़ावा देने के लिए किसी प्रकार की संसाधन की कमी नहीं आयेगी,

बुराड़ी करने कहा इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े जी ने अपने संबोधन में कहा तीरंदाजी प्राचीन कला है महाभारत और रामायण में भी इनका उपयोग है और राजा रामचंद्र जी लंका में विजय प्राप्त की और और विजय प्राप्त कर अयोध्या में रामलाल का मंदिर भी बनने जा रहा है पूरे देश में खुशहाली का माहौल है

मुबारका नीड अपने संबोधन में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए पूरे देश आए तीरंदाजीओ का वंदना अभिनंदन किया , और कहा कि कहा कि छत्तीसगढ़ प्रदेश तीरंदाजी संघ घोषणा की थी जो तीरंदाज राष्टीय स्तर में मेडल आएगा प्रत्येक तीरंदाज को 25-25000 का कैश प्राइज दिया जाए इस तारीख में छत्तीसगढ़ के तीन मेडल प्राप्त हुए तीनों को 25-25000 का कैश प्राइज मुख्य अतिथि के हाथों प्रदान किया गया कार्यक्रम का संचालन हीरू साहू ने किया धन्यवाद ज्ञापन आरएसएस के त्रिपाठी जी ने किया इस अवसर पर विशेष रूप से गोपाल खंडेलवाल जी सुरेश सुखीजा जी सुनिल अग्रवाल जी सोनू राजपूत जी संतोष जी बागी जी अशोक दुबे जी अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे

**छत्तीसगढ़ राज्य की पदमा साहू ने कान से पदक जीता**

30 मीटर की दूरी पर पदमा साहू ने कांस्य पदक जीत कर छत्तीसगढ़ प्रदेश का नाम रोशन किया. बालकों की टीम 11 में स्थान पर रही जबकि बालिकाओं की टीम तीसरे स्थान पर रही मिस इवेंट की टीम तीसरे स्थान पर रही जिसका मैच कल होना है छत्तीसगढ़ तीरंदाजी संघ द्वारा कुल तीन पदक जीते गए जिसमें पदमा साहू का योगदान विशेष रहा पदमा साहू ने 30 मीटर की दूरी पर कांस्य पदक जीता तथा व्यक्तिगत ओलंपिक राउंड इवेंट में भी कांस्य पदक जीता और पदमा साहू और तुषार नेताम की जोड़ी ने भी सिल्वर मेडल जीता इस तरह छत्तीसगढ़ प्रदेश तीरंदाजी संघ के खाते में तीन राष्टीय पदक आए

# भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ ने स्वास्थ्य मंत्री से मुलाकात कर सौंपा ज्ञापन

**रायपुर। भा**जपा चिकित्सा प्रकोष्ठ केचिकित्सक प्रदेश संयोजक विमल चोपड़ा के नेतृत्व में माननीय मंत्री स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण श्याम बिहारी जयसवाल से सर्किट हाउस रायपुर में मुलाकात कर निम्न बिन्दुओ का ज्ञापन प्रस्तुत किया

1. ग्रामीण चिकित्सकों के लिए क्या किया जा सकता है इस पर विचार करने के लिए नियम अनुसार कार्रवाई करने का आश्वासन दिया ताकि ग्रामीण चिकित्सकों का अहित न हो

2.होम्योपैथी चिकित्सा महाविद्यालय को ग्रांट हेतु सुझाव पर विचार कर के उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया।

3. आयुष्मान योजना के अंतर्गत पूर्व में निर्धारित बजट समाप्त हो जाने के कारण भुगतान लंबित है महोदय द्वारा बताया गया कि निर्धारित बजट से अधिक खर्च हो जाने के कारण आयुष्मान का भुगतान कुछ दिनों से लंबित है इस हेतु 1000 करोड रुपए की व्यवस्था की जा रही है। आयुष्मान योजना के द्वारा प्राप्त लाभ को इग्नोर नहीं किया जा सकता पर इस योजना मैं हो रही भ्रष्टाचार को मंत्री महोदय द्वारा संज्ञान में लिया गया इसे रोकने के लिए हर कदम उठाने की बात की गई.

4. माननीय मंत्री महोदय बताया कि स्वास्थ्य विभाग की प्रणाली को सुधारने हेतु 5 शासकीय टीमों का गठन किया गया जो दूसरे राज्य में जाकर उनके स्वास्थ्य प्रणाली को अध्ययन करेंगे एवं अच्छी बातों का पता चलेगा उसका समायोजन प्रांत की स्वास्थ्य व्यवस्था में किया जाएगा

6.स्वास्थ्य संस्थानों एवं चिकित्सक के अभाव क्षेत्र में पी पी मॉडल पर स्वास्थ्य सेवाओं के गठन पर मंत्री महोदय की स्पष्ट राय थी इसे लागू करने से प्रदेश शासन को इंफ्रास्ट्रक्चर में होने वाले खर्चे से बचाव हो पाएगा तथा तत्काल स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदेश की जनता को मिल पाएंगे पर पूर्व में हुए पी पी मॉडल के विरोध को ध्यान में रखते हुए योजना ऐसी बनाई जाएगी की किसी प्रकार की कोई गलती ना हो.

7. नर्सिंग होम एक्ट में दिए सुझाव के अनुरूप एवं नियम अनुसार संशोधन हेतु प्रयास किए जाएंगे,

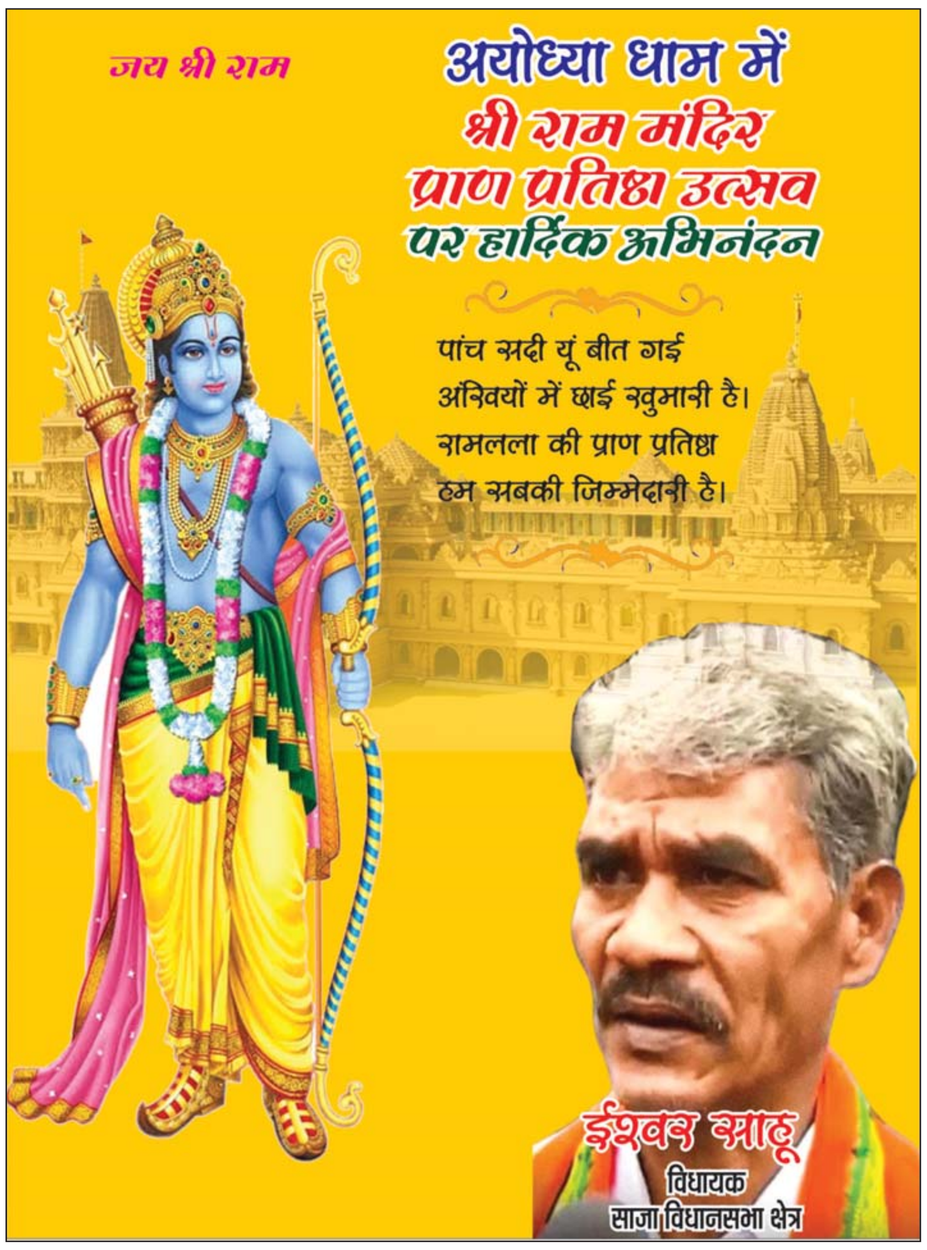

# समाज और संस्कृति की नींव होता है घर

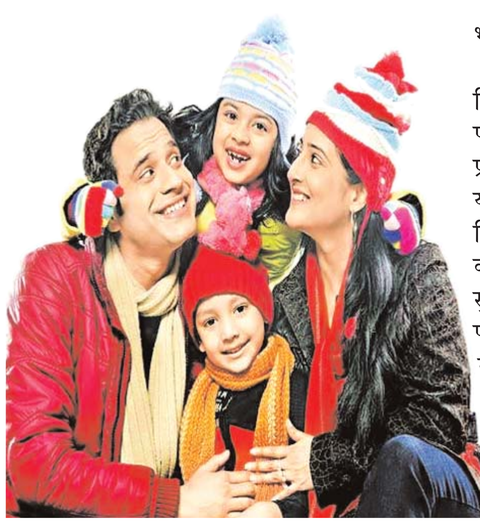

अनामिका पाण्डेय

घर, बड़ा ही सुन्दर शब्द है .संस्कृत के मूल से रूपांतरित यह शब्द भारत की सनातन वैभव को प्रदर्शित करती है . घर मात्र रहने का स्थान नहीं है यह अत्यंत व्यापक ,चिंतनीय संकल्पना है जहां ऐसे लोगो का वास्तव्य है जो आपस में सिर्फ किस लौकिक सम्बन्धो से नहीं तो मन से जुड़े रहते है. अपनी भावनाओं के साथ दूसरो की भावनाओं को सम्भालते हुए हर कोई आनंद का अनुभव कर सके इस पर विचार करते है . घर का हर सदस्य प्रत्यक व्यक्ति का ध्यान रखता है . जहां कोई क्रोधित हो जाए , रूठ जाए तो उसको शांत कराने या प्रसन्न कराने घर का प्रत्येक सदस्य लग जाता है . कभी किसी नए सदस्य के आने से घर में उत्साह की लहर उमड़ जाति है तो कभी किसी की विदाई में पूरा घर सन्न रह जाता है . घर और उसमे रहने वाले वालो का यही नाता हमारी भारतीय संस्कृति की विशिष्ठता है .

घर के बड़े लोगो का सम्मान एक दूसरे से विचार विमर्श पश्चात लेने वाले निर्णय का परिणाम आने वाली पीढ़ी पर होता है.घर के प्रत्येक व्यक्ति आदर सम्मान करने का परिणाम यह होता है कि जब ये सदस्य बाहर जाकर किसी कम्पनी या कार्यालय में चर्चा या निर्णय की प्रक्रिया में होते है तो एक दुसरे के पक्ष को सुनकर उचित निर्णय लेने में सक्षम होते है . परिणामत~ऐसे व्यक्ति समाज के लिए भी आदर्श बन जाते है .

घर के संस्कार हमारे संस्कृति के नीव है जो आरोग्य पर निर्भर है.प्राचीन समय से हमारे संस्कृति का एक विचार रहा है शुचिता ! यह शुचिता शरीर और मन दोनों का है . यदि घर में कही बाहर से आ रहे हो तो प्रवेश करने से पहले जूते–चप्पल बहर उतारकर अपने हाथ मुंह आदि को अच्छी तरह से पोंछकर ही प्रवेश करें,मुंह धोते समय आँख,कान,नाक धोना और कुल्ला करना आवश्यक है .इसका अर्थ है की बाहर से किसी भी अपवित्रता ,अशुद्ध अथवा व्याधिकारक पदार्थ घर में पं आये .पछले कुछ वर्षो में हम इसे भूलने लगे थे लेकिन कोविड काल ने हमे इनका महत्व पुन~ ज्ञात करा दिया . यदि कोई खाने का सामान बाहर से लाया गया हो तो उसे रसोई घर में न ले जाकर बाहर ही खाए ताकि उससे किसी प्रकार का संक्रमण न हो . बाहर से आये किसी भी व्यक्ति अथवा अतिथि को रसोई में न ले जाए ताकि उससे किसी प्रकार की व्याधि या संक्रमण न होने पाने .घर के सभी सदस्य एक दुसरे के स्वाद का ध्यान रखते हुए एक साथ गरम परोसा हुआ भोजन खाते है और यही संस्कार आने वाली पीढ़ी तक निरंतर चलता रहता है .

# मन और शरीर दोनों को प्रभावित करता है नशा

डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय

हमारी कुछ आदते परिवार और सामज के लिए आनंददायी होती है तो कुछ दुखदायी , इन आदतों में मुख्य रूप से शामिल है नशा . सामन्यत: अल्कोहल ,तम्बाखू,ड्रग्स को नशे के रूप में उपयोग करने वाले अनेको लोग मिलते है लेकिन इसके अलावा भी कुछ आदते है जिन्हें लोग नशे के अंतर्गत नही मानते जैसे खानपान का नशा , सोशल मिडिया का नशा . नशा चाहे कैसा भी हो यह एक गंभीर सामाजिक बुराई है इसका उपचार भी समाज में रहकर ही ढूंढना होगा . मनुष्य का व्यवहार उसके विचार , भावना और क्रियाओं का परिणाम होता है. हम सभी प्राय: बिना सोचे समझे क्रियाओं का शिकार होते है इसे ही अविवेकपूर्ण व्यवहार कहते है जिसे (Impulsive behaviour) के रूप में जाना जाता है . हमारे देश में 28 करोड़ लोग नशे से प्रभावित है और यही मुख कारण है की देश की आबादी का करीब 5त्र किशोर जो 18 वर्ष से कम उम्र के किशोर नशे के सम्पर्क में है. अपने बड़ो को नशा करते देख यह वर्ग भी नशा करके खुद को सहज महसूस करने लगते है और धीरे धीरे एडिक्शन के शिकार हो जाते है .

नशा करने वालो पैरेंट्स के घरो में नशा एक सायकल की तरह काम करता है और अक्सर ऐसे घरों में बच्चे और पैरेंट्स दोनों ही एकदूसरे के नशे को बढ़ावा देने का काम करते है . साथ ही घर में लड़ाई ,कलह, बर्बादी ,सामाजिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों से जूझते रहते है . जिस घर में बड़े नशा करते है उस घर में बच्चा सबसे कमजोर कड़ी होता है जिस पर नशे का प्रभाव सबसे जल्दी पड़ने की सम्भावना होती है क्योंकि वह डेवलपिंग कंडिशन में होते है और अपने माता पिता से भावनात्मक और व्यवहारिक रूप से जुड़े रहते है . जो लोग नशा करते है वो भावनात्मक तौर पर कमजोर हो जाते है गलत काम करना,गाली गलौच करना , लड़ाई झगड़ा करना यह बात उनके लिए नार्मल बात हो जाति है . नशे के दुष्प्रभाव तो बहुत है रिपोर्ट्स कहती है की कालेज लाईफ में युवा सबसे ज्यादा नशे की शिकार होते है या लत में पड़ते है . 11 वी 12 वी कक्षा में आते आते बच्चो में नशा करने की इच्छा उत्पन्न होने लगती है जिसका एक कारण लोग पढाई का स्ट्रेस भी मानते है तो घर की लाईफ स्टाइल या फिर पैसो की अत्याधिक तंगी भी उन्हें इस दलदल की और ले जाति है , गलत संगति भी एक प्रमुख कारण देखा गया है .कुछ बड़ी बड़ी नामी कालेजो और विश्विद्यालयों में नशे का व्यापार बड़े स्तर पर हो रहा है जिस पर प्रशासन ज्यादा ध्यान नहीं दे पा राह जिससे कुछ बच्चे मजबूरी के चलते भी फस कर अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे और हम समाज के जागरूक नागरिक देखकर अनदेखा कर रहे है . स्कूल और कालेज जो पहले मन्दिर हुआ करते थे जहां हम शिक्षा ग्रहण कर अपना भविष्य संवारते थे आजकल नशेड़ियों ने इन पवित्र जगहों को भी अड्डा बना लिया है यह हम सभी के लिए बेहद ही चिंतनीय है . बच्चो को इस विषैले दलदल से कैसे बाहर निकाला जाय ,कैसे बुरी संगत से बचाया जाय एक चैलेन्ज है .

चिकित्सक कहते है कि नशा मन और शरीर दोनों को बुरी तरह प्रभावित करता है . नशे के लिए कुछ केमिकल्स उत्तरदायी होते है हमारे ब्रेन में दिमाग में कई तरह के केमिकल बनते है जैसे आक्सीटोसिन,डोपामिन,एन्दार्फिन,सेरोटनिन आदि. ये केमिकल हमारे शरीर में मौजूद होते है लेकिन मनुष्य अपने इगो ,अहंकार और नासमझी के चलते इनका सही तरीके से इस्तेमाल करना नही जान पाता.जब वह वह अपने इमोशंस पर काबू नहीं कर पाता तो ये टाक्सिक हमारे अंदर से खत्म होने लगते है और फिर डॉक्टर्स हमे इन केमिकल की दवाईया देता है जिसके इस्तेमाल से हमें कुछ देर के लिए ख़ुशी महसूस होती है जो निश्चित रूप से अन्दूरनी ख़ुशी नहीं होती.

बाहरी दुनिया में केमिकल्स के बड़े बड़े प्लांट देखने को मिलते है सबसे पावरफुल केमिकल्स की फैक्ट्री इंसान के अंदर है हमार दिमाग , जरुरत इन्हें सही डायरेक्शन में लाने की ,डोपामिन जैसे केमिकल्स आपको नशे से नहीं सफलता से प्राप्त होगे जिसके लिए जरुरत माइंड एवं ब्रेन की साइंस को समझने की जिस एनेलपी के माध्यम से बेहतर ढंग से समझा जा सकता है .ख़ुशी प्राप्ति के लिए प्रयास मटेरियालिस्टिक के साथ रियलिस्टिक भी होना चाहिए क्योंकि यूथ में मटेरियल सैटीस्फेकशन जरुरी है. लाईफ को जितना रियलिस्टिक जियेंगे जिन्दगी उतनी ही खुशहाल होगी , जितना रियल होंगे उतना इगो और घमंड कम होगा आप प्रत्येक इंसान को रिस्पेक्ट दोगे . सायको न्युरोबिक प्रोग्रामिंग के द्वारा माइंड और ब्रेन की प्रोग्रामिंग की जा सकती है जिससे आप गुस्सा, चिड़न,व्यर्थ की चिंता के साथ साथ नकारात्मक भावनाओ से उबर कर सकारत्मक इमोशंस के स्तर पर आकर खुश और रेयालिस्टीक जिन्दगी जी सकते है .

# बॉस या टीचर के सामने जाने पर घबराहट क्यों होने लगती है?

एक बात बताइए. बॉस के साथ आपकी मीटिंग होने वाली है. उस मीटिंग को लेकर आप बहुत नर्वस हैं. इतना कि रातभर सो नहीं पाए. मीटिंग से पहले आप बहुत घबराए हुए हैं. धड़कने बढ़ी हुई हैं. दिल धक–धक कर रहा है. मीटिंग के दौरान आप इतना नर्वस हैं कि ठीक तरह से बोल भी नहीं पा रहे. पर तैयारी आपकी पक्की थी. उसके बावजूद आप ठीक तरह से बोल नहीं पा रहे. जो बातें बोलना चाहते थे, वो भूल गए. मीटिंग के बाद आप उसके बारे में ही सोचे जा रहे हैं. ऐसा पहली बार नहीं हुआ है. जब भी आप अपने बॉस या किसी ऐसे सीनियर के सामने जाते हैं जो आपसे ज़्यादा पॉवरफुल है, आपका यही हाल होता है. ज़रूरी नहीं कि ऐसा हमेशा बॉस के साथ ही हो. वो कोई भी शख्स हो सकता है जो एक अथॉरिटी रखता हो. जैसे टीचर, प्रिंसिपल, कोई कलीग, कोई अफ़सर, कोई भी. पता है ऐसा क्यों होता है. वजह है अथॉरिटी एंग्जायटी. ये क्या है, क्यों होती है, इसके लक्षण और इलाज क्या है चलिए इन सबके बारे में जानते हैं डॉक्टर से.

## अथॉरिटी एंग्जायटी क्या होती है?

जैसा कि नाम से पता चल रहा है अथॉरिटी एंग्जायटी वो एंग्जायटी है जो आपको अथॉरिटी वाले लोगों के सामने महसूस होती है. लोगों को अथॉरिटी एंग्जायटी तब महसूस होती है, जब उनका सामना अपने से सीनियर लेवल के इंसान से होता है, जो कि पद में उनसे ऊंचा है या समाज में ज़्यादा ताकतवर है. अथॉरिटी एंग्जायटी सोशल एंग्जायटी का ही एक रूप है. इसके लक्षण एंग्जायटी के लक्षणों जैसे ही होते हैं. ये लक्षण मानसिक और शारीरिक दोनों ही रूप में सामने आते हैं.

## लक्षण

मानसिक तौर पर जो लक्षण महसूस होते हैं उनमें सबसे आम है साफ़ तौर पर सोच न पाना.

- फोकस न कर पाना, अटेंशन देने में समस्या होती है
- अपनी बात नहीं रख पाते
- बेचैनी और चिंता महसूस होती है
- दिल की धड़कन बढ़ जाती है
- गला सूखने लगता है
- साफ़ न बोल पाना
- पसीना आना
- मुंह लाल हो जाना
- पेट में गुड़गुड़ होना
- हाथ–पैर हिलाते रहना
- कंपन होना
- बार–बार यूरिन जाना

ऐसे लक्षण सीनियर से मीटिंग होने से पहले महसूस होने लगते हैं. इन लक्षणों की शुरुआत यंग एज में हो जाती है, यानी टीनएज से इंसान जब एडल्ट बन रहा होता है. कुछ मामलों में ये लक्षण उम्रभर रह सकते हैं. अगर कोई इंसान इन लक्षणों को बहुत ज़्यादा महसूस कर रहा है तो वो हर उस सिचुएशन से बचने की कोशिश करता है जहां उसका सामना सीनियर से हो सकता है. इसका असर उसकी पढ़ाई पर और करियर पर पड़ता है. आपसी रिश्तों पर भी असर पड़ता है. कॉन्फिडेंस में गिरावट आती है. दूसरों से खुद की तुलना करने पर इंसान को एहसास होता है कि वो कुछ ख़ास सिचुएशन नहीं हैंडल कर पा रहा.

## कारण

इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे जेनेटिक. अगर आप जेनेटिक तौर पर एंग्जायटी डिसऑर्डर के शिकार हैं तो ऐसा होने की संभानवा ज़्यादा है. अगर बचपन में या बड़े होते हुए आपने रिजेक्शन का बहुत सामना किया है तो भी ऐसा होता है. या इस दौरान ज़िंदगी में मौजूद सीनियर फिगर से आपको सपोर्ट नहीं मिला हो तब भी ऐसा होता है. बचपन में ये सीनियर फिगर टीचर और मां–बाप होते हैं. बड़े होते हुए अगर आपके आसपास लोगों ने आपको शर्मिंदा महसूस करवाया है या कॉन्फिडेंस नहीं दिया तो आप अथॉरिटी एंग्जायटी के शिकार हो सकते हैं. क्योंकि आपको हर वक़्त ये महसूस होता है कि आपको जज किया जा रहा है या परखा जा रहा है. इसलिए कुछ भी बोलते हुए लगता है कि %क्या मैं सही बोल रहा हूं%, %कपड़े सही पहने हैं या नहीं%, %पसीना दिख तो नहीं रहा%, %कहीं पता तो नहीं चल रहा कि मैं परेशान हूं% या %ऐसा तो नहीं लग रहा कि मैं बुद्धू हूं, मुझे कुछ नहीं आता%.

अगर ये सोच लगातार दिमाग में चल रही होती है तो इंसान उन चीज़ों पर फोकस नहीं कर पाता जो ज़रूरी हैं. इस वजह से जीवन में बहुत मुश्किलें आती हैं. ये जानना ज़रूरी है कि ये सोशल एंग्जायटी का ही हिस्सा है. इसे ठीक किया जा सकता है.

## इलाज

कुछ सिचुएशन में जो माइल्ड टू मॉडरेट केसेस हैं , उनमें सोशल स्किल्स सीखने से आसानी होती है. साथ ही कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी से भी फ़ायदा मिलता है. कुछ गंभीर मामलों में दवाइयां भी मदद करती हैं.

# 700 शवों के पोस्टमॉर्टम में सहयोग करने वाली संतोषी को मिला रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का आमंत्रण

**रायपुर।** 'जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करहिं सब कोई..' श्रीरामचरितमानस के अरण्यकाण्ड की यह चौपाई बहुत विख्यात है। प्रभु श्रीराम के वनगमन के दौरान महर्षि अगस्त्य के आश्रम में आगमन हुआ, उसके ठीक पहले उन्होंने यह बात कही कि जिस पर प्रभु श्रीराम की कृपा होती है उस पर सम्पूर्ण जगत की कृपा हो जाती है। उक्त चौपाई को चरितार्थ करता एक प्रसंग सामने आया है।

उत्तर बस्तर कांकेर जिले की जनपद पंचायत नरहरपुर के भगतसिंह वार्ड क्रमांक 05 में रहने वाली श्रीमती संतोषी दुर्गा को अयोध्या में आगामी 22 जनवरी को श्रीराम की मूर्ति की होने वाली प्राण–प्रतिष्ठा के लिए आमंत्रण मिला है। श्रीमती संतोषी इस आमंत्रण से इतनी भावविभोर हो गई कि उनकी आंखों से खुशियों का सैलाब उमड़ पड़ा। उन्होंने इसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कोटि–कोटि साधुवाद करते हुए कहा कि मॉर्च्युअरी में छोटी सी नौकरी करने वाली के काम को इतना बड़ा सम्मान मिला। वे अतिसौभाग्यशाली हैं, जहां बड़े–बड़ों को आमंत्रण नहीं मिला, वहीं उनको प्रभु श्रीरामलला का बुलावा आया।

गौरतलब है कि श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह को लेकर पूरे देश में उत्साह का माहौल है। अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले इस ऐतिहासिक आयोजन में शामिल होने छत्तीसगढ़ के नागरिकों को भी निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ है। कांकेर जिले के नरहरपुर निवासी श्रीमती संतोषी दुर्गा को भी श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल होने के लिए विशेष आमंत्रण मिलने पर भावुक होते हुए कहा कि भगवान श्री राम ने उंगली पड़कर मुझे अयोध्या बुलाया है। श्रीमती संतोषी दुर्गा के परिवार में उनके पति श्री रविन्द्र दुर्गा सहित छह सदस्य हैं। श्रीमती दुर्गा अपने तीन बच्चे अभिषेक, योगेश्वरी और बहन बिंदू सिंदूर के साथ रहती हैं।

पेशे से स्वीपर श्रीमती संतोषी दुर्गा नरहरपुर स्थित स्वास्थ्य केन्द्र में अपने पिता के साथ जाया करती थी। बाद में उनकी स्वीपर के पद पर नियुक्ति हुई। वह 700 से ज्यादा पोस्टमॉर्टम कार्य में सहयोग कर चुकी हैं। श्रीराम मंदिर ट्रस्ट की ओर से 06 जनवरी 2024 को संतोषी को जब निमंत्रण मिला तो उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े। उन्हें मिले आमंत्रण से पूरे नरहरपुर में खुशी का वातावरण है।

# छत्तीसगढ़ देश का तीसरा सबसे स्वच्छ राज्य

## स्वच्छ सर्वेक्षण में राज्य के साथ ही पांच नगरीय निकायों को भी मिला पुरस्कार

**रायपुर।** छत्तीसगढ़ देश का तीसरा सबसे स्वच्छ राज्य बन गया है। केन्द्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित स्वच्छ सर्वेक्षण–2023 में छत्तीसगढ़ को महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के बाद देश के तीसरे सबसे साफ–सुथरे राज्य का दर्जा मिला है। प्रदेश की इस उपलब्धि के लिए राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने नई दिल्ली के भारत मंडपम कन्वेन्शन सेंटर में आयोजित समारोह में पुरस्कृत किया। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और उप मुख्यमंत्री व नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरूण साव ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। केन्द्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी, सचिव श्री मनोज जोशी और स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) की निदेशक श्रीमती रूपा मिश्रा भी समारोह में शामिल हुईं। स्वच्छ सर्वेक्षण में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राज्य के पांच नगरीय निकायों रायपुर, महासमुंद, कुम्हारी, आरंग और पाटन को भी समारोह में पुरस्कृत किया गया।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव ने प्रदेश और नगरीय निकायों की इस उपलब्धि पर संबंधित निकायों के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, समन्वयकों तथा स्वच्छता दीदियों को बधाई और शभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि इनके उत्कृष्ट कार्यों के कारण आज प्रदेश को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित होने का मौका मिला है। उन्होंने उम्मीद जताई कि राज्य के शहरों को साफ–सुथरा एवं कचरामुक्त रखने के लिए ये आगे भी अपने बेहतरीन कार्यों को जारी रखेंगे और अन्य नगरीय निकायों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेंगे।

शहरों को स्वच्छ रखने प्रदेश में हो रहे लगातार अच्छे कार्यों के कारण छत्तीसगढ़ को देश के तीसरे सबसे स्वच्छ राज्य का दर्जा मिला है। स्वच्छ सर्वेक्षण के परिणामों के मुताबिक गारबेज फ्री सिटी के अंतर्गत प्रदेश के दो शहरों को फाइव स्टार रेटिंग, 23 शहरों को थ्री स्टार रेटिंग और 47 शहरों को सिंगल स्टार रेटिंग मिला है। राज्य में ओडीफ प्लस प्लस वाले 164, ओडीफ प्लस वाला एक और ओडीएफ वाले तीन शहर हैं। प्रदेश के एक नगरीय निकाय को वाटर प्लस का दर्जा मिला है।

महासमुंद नगर पालिका को पूर्वी जोन में 50 हजार से एक लाख तक की आबादी वाले शहरों की श्रेणी में सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार मिला है। देश के पूर्वी जोन में कुम्हारी नगर पालिका को 25 हजार से 50 हजार तक की आबादी वाले शहरों की श्रेणी में और आरंग नगर पालिका को 15 हजार से 25 हजार तक की आबादी वाले शहरों की श्रेणी में सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार मिला है। पाटन नगर पंचायत को एक लाख से कम आबादी वाले शहरों में देश के दूसरे सर्वाधिक स्वच्छ शहर के लिए पुरस्कृत किया गया है। ओडीएफ प्लस प्लस का दर्जा प्राप्त पाटन को गारबेज फ्री सिटी में फाइव स्टार रैंकिंग मिला है।

# कास्मो एक्सपो-2024 का शानदार आगाज, उद्घाटन के दिन ही छलका उत्साह

**रायपुर।** श्रीराम बिजनेस पार्क में शुक्रवार से शुरु हुए चार दिवसीय कास्मो एक्सपो 2024 का उद्घाटन करते हुए स्कूल एवं उच्च शिक्षा, धर्मस्व, संस्कृति व पर्यटन मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि रोटरी कास्मो सबको साथ लेकर चलता है। रोटरी का हो,राइस मिलर्स का हो,आटोमोबाइल्स का हो अलग-अलग आयोजन होते हैं पर कास्मो एक्सपो सबका मिला जुला स्वरूप होता है। यहां व्यक्ति को घर,कार,कपड़े से लेकर स्कूल -कालेज में बच्चों की पढ़ाई की जानकारी से लेकर डाक्टर्स के स्टाल लगे हुए हैं और खुशी की बात है कि रामलला का दरबार भी सजा हुआ है। जीवन की सारी उपयोगिता को एक जगह एकत्रित करता है कास्मो एक्सपो इसके लिए रोटेरियंश बधाई के पात्र हैं।

श्री अग्रवाल ने कहा कि चारो तरफ खुशहाली का माहौल है कि इसलिए एक्सपो में जिन्होने स्टाल लगाया उन्हे भी फायदा हो,जिन्होने लगवाया है उन्हे भी फायदा और रामलला आ रहे हैं तो खुशी की इस बात पर अपना कास्मो भी जोरदार हो। महिला व बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि रोटरी कास्मो में आने का पहला अवसर उन्हे मिला है सेवाभावी कार्यों के लिए पहचान रखने वाले रोटरी मेंबर्स के ऐसे आयोजन के लिए वे बधाई देती हैं। सूरजपुर जिला भाजपा के अध्यक्ष रो.बाबूलाल गोयल ने भी आयोजन की सफलता के लिए बधाई दी। इससे पूर्व दीप प्रज्जवलन व गणपति वंदना के बाद डिजिटल बटन दबाकर श्री बृजमोहन अग्रवाल ने औपचारिक रूप से कास्मो एक्सपो 2024 का शुभारंभ किया।

शुक्रवार की शाम जब श्रीराम बिजनेस पार्क में कास्मो एक्सपो-2024 की शुरूआत हुई तो पूरा परिसर जगमगा उठा जैसे कि इस पल का ही इंतजार था। विशाल मैदान में सुव्यवस्थित 350 स्टॉलों के माध्यम से विविध सेगमेंट की मौजूदगी व रोटेरियंश की मेहनत बता रहा था कि अब कास्मो एक्सपो केवल रायपुर नहीं बल्कि पूरे मध्य भारत का फेयर के रुप में पहचान स्थापित कर चुका है। बिल्डर्स हो या ऑटोमोबाइल्स ,इलेक्ट्रानिक्स हो या कम्प्यूटर, निजी व सरकारी सेक्टर के स्टॉल में लोगों की खासी उपस्थिति पहले ही दिन नजर आई। खास बात ये कि न एंट्री पर शुल्क न पार्किंग पर, एक्सपो के बीचो बीच विशाल मंच पर द इंडियन रोलर के धुन की शानदार पेशकश से विजिटर्स थिरकने मजबूर हो रहे थे।

उद्घाटन दिवस पर स्वागत भाषण में कास्मो एक्सपो ट्रेड एंड बिल्ड फेयर आयोजन के बारे में प्रकाश डाला गया। बताया गया कि केवल बिजनेस के लिहाज से ही यह आयोजन नहीं किया जाता बल्कि एक प्लेटफार्म पर सबको एकत्रित करने के साथ लोगों की जरूरतों को पूरा किया जाता है। वहीं आयोजन के बाद जो राशि बच जाती है उसका उपयोग रोटरी अपने सेवाभावी कार्यों में उपयोग करता है जैसे शिक्षा,स्वास्थ्य,पर्यावरण आदि।

इस मौके पर प्रमुख रूप से प्रोग्राम चेयरमेन रो. आशीष नत्थानी, को-चेयरमेन रो. रोहित जैन व प्रदीप डी गोयल, प्रोग्राम ट्रेजरर्स रो. सौरभ सोनी, क्लब प्रेसीडेंट रो. रविन्द्र शिरे व सेक्रेटरी रो. मनोज अग्रवाल। पीआरओ - रो. रमेश राव, रो. कीर्ति व्यास, रो. संजय त्रिपाठी, रो. रमेश अग्रवाल, रो. आनंद सिंघानिया, रो. अजय गोयल, रो. आशीष अग्रवाल व रो. अजय तनवानी उपस्थित थे।

## कास्मो एक्सपो के पार्टनर्स--

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क, क्रेडाई छत्तीसगढ़ व एएसए के संयुक्त तत्वाधान में, को-स्पार्शर्स है एचडीएफसी, एक्सिस बैंक, छत्तीसगढ़ हर्बल्स, छत्तीसगढ़ टूरिज्म, फिनोलेक्स पाइप्स व व्हीटी। स्टील पार्टनर - सेल, जेएसड्ब्ल्यू वन टीएमटी, कामधेनु स्टील व सागर टीएमटी। ऑटोमोबाइल्स पार्टनर - एचडीएन मोटर्स। एजुकेशन पार्टनर - आईटीएम यूनिवर्सिटी। सर्विलेंस पार्टनर - आर्शिवाद इलेक्ट्रानिक्स। फोटोग्राफी - पिक एक्सक्लूजिव। फूड एंड फैशन पार्टनर-रायपुर फूडी लवर्स।

## एक्सपो में शामिल प्रमुख सेगमेंट--

कास्मो एक्सपो में मुख्य रूप से बिल्डर्स एंड डेवलपर्स व एंसलरीज, आटोमोबाइल्स, इंटीरियर्स एंड आर्किटेक्चरल प्रोड्क्टस एंड सर्विस, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रानिक्स एंड होम एप्लायंसेस, होम एंड आफिस आटोमेशन, एजुकेशन, हेल्थ केयर एंड लाइफ स्टाइल, बैंक व फाइनेंसियल इंस्टीट्यूशन, फूड एंड हास्पिलिटी, ट्रेवल व टूरिज्म तथा शासकीय विभाग के स्टॉल होल्डर्स शामिल हैं।


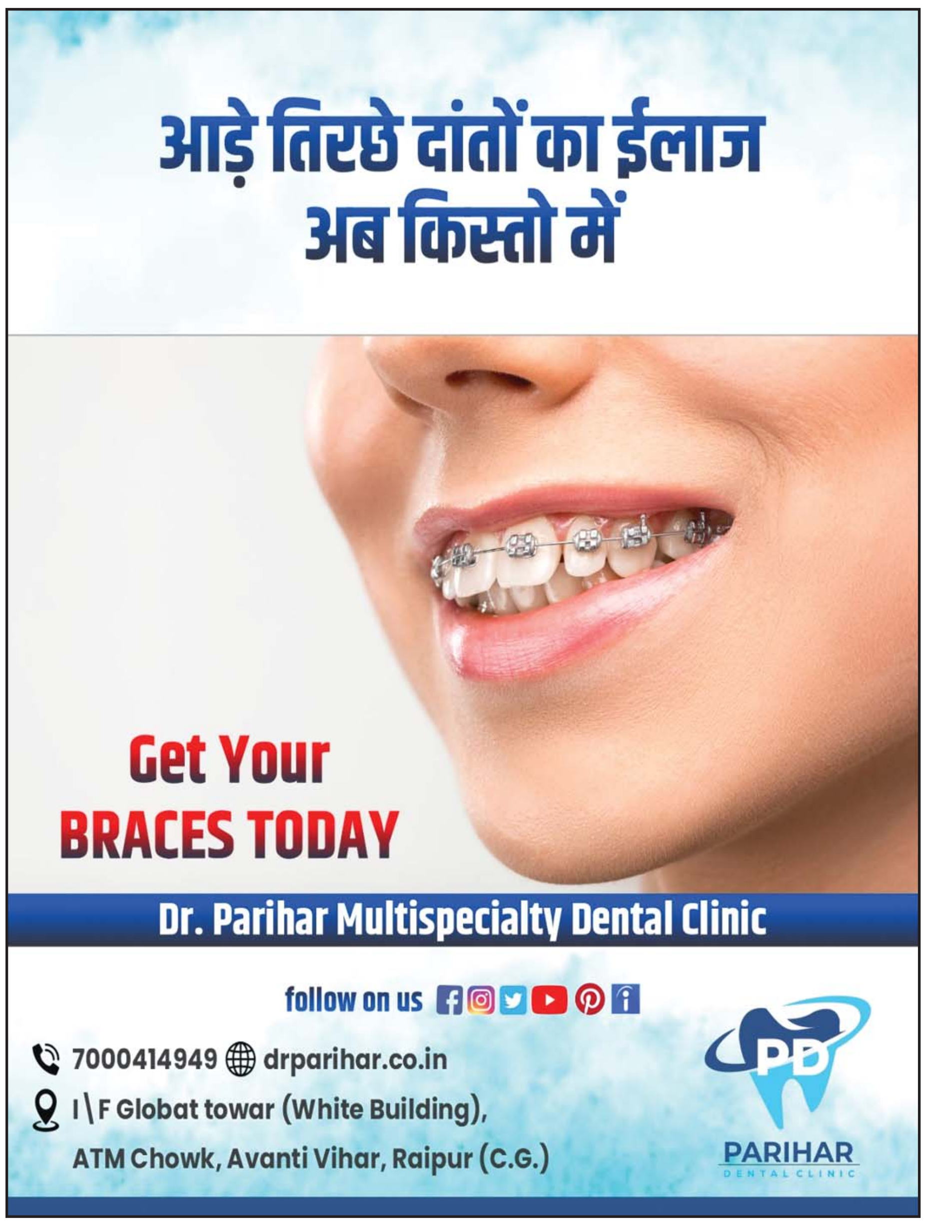

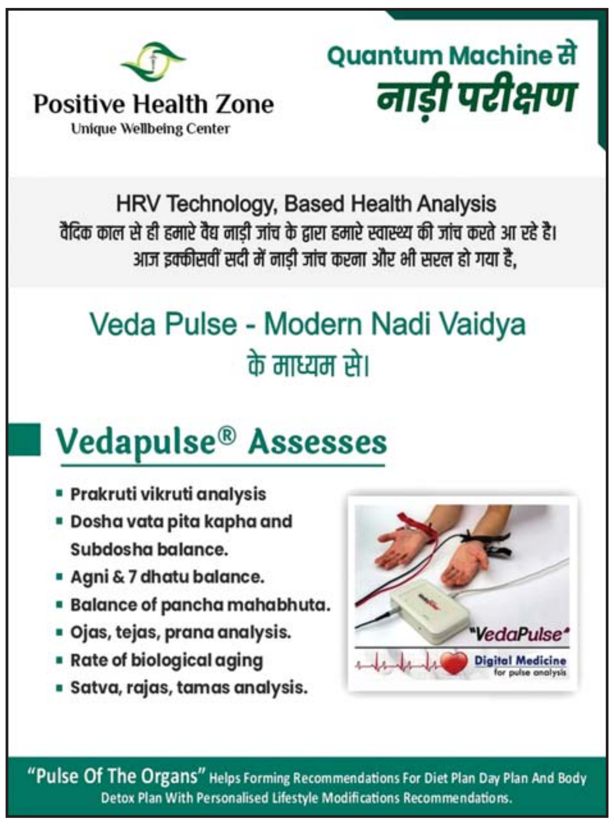

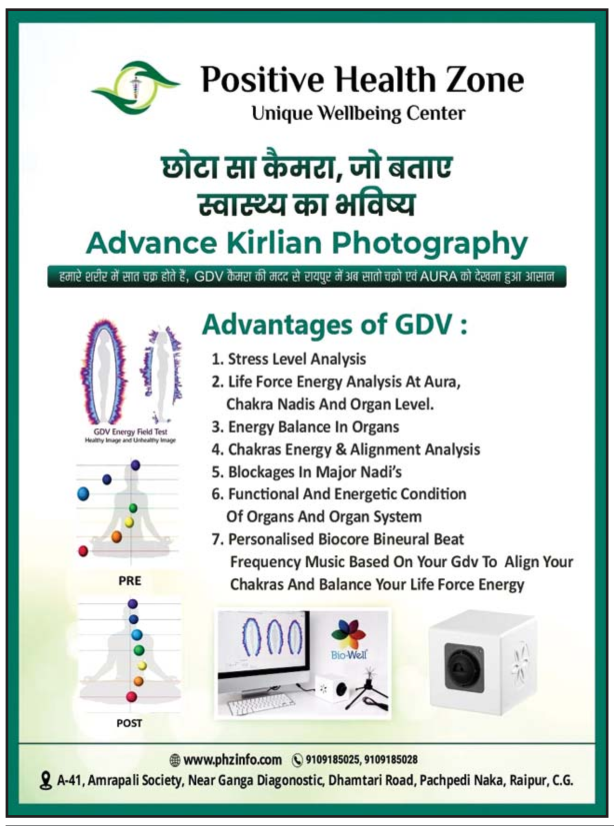

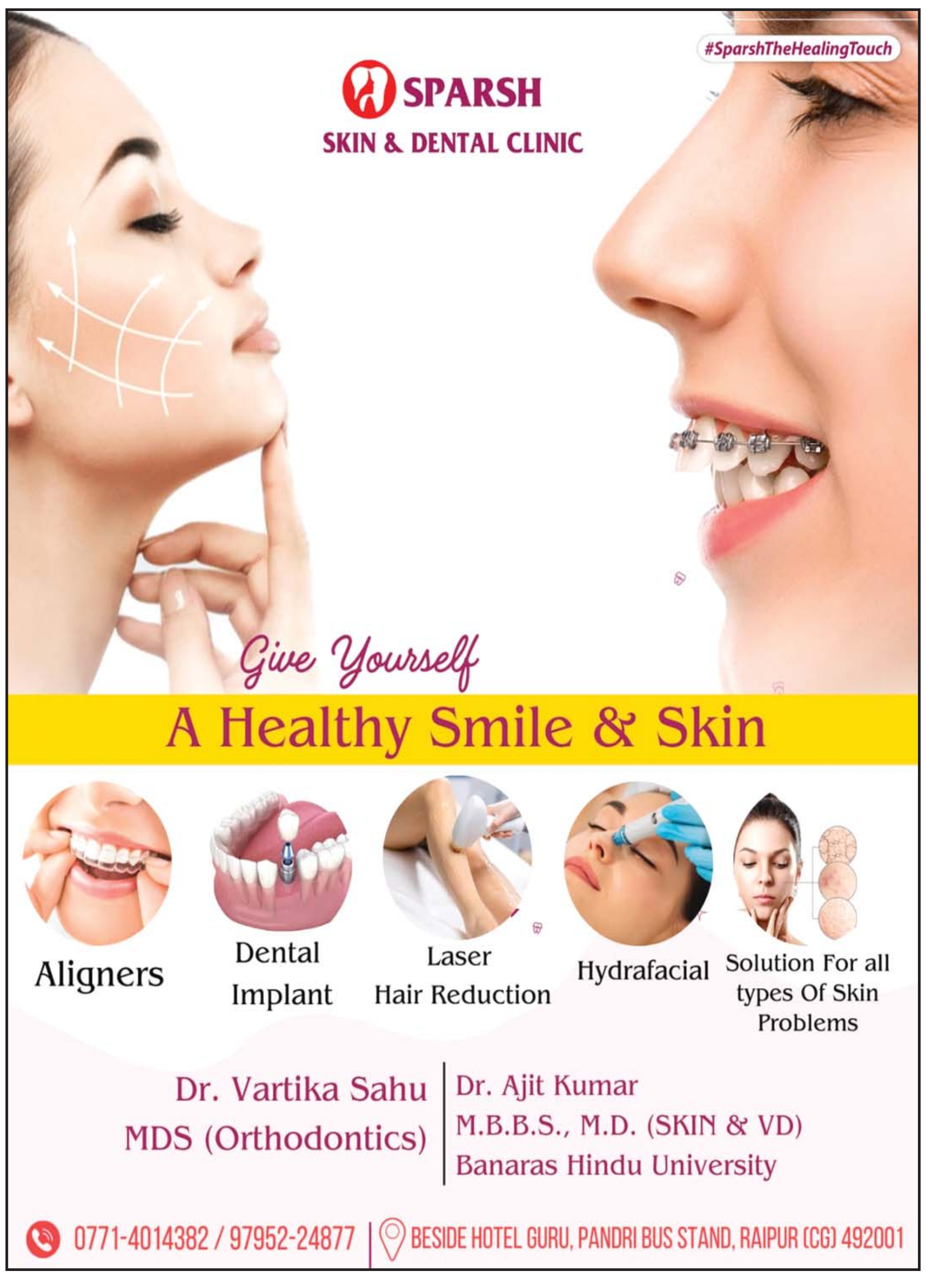



स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा आसमां पब्लिशर्स इंडिया प्रा.लि. जयराम काम्पलेक्स गली, मालवीय रोड, जयस्तंभ चौक रायपुर ( छ.ग. ) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर ( छ.ग. ) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979